हरिभूमि

झज्जर-बहादुरगढ़ भूमि

रोहतक, रविवार, 17 अगस्त 2025

11 नशा मुक्त रहने की प्रतिज्ञा करवाई

12 सांसद ने किया शहीद की प्रतिमा का अनावरण

खबर संक्षेप

गोगा नवमी के उपलक्ष्य में कानोंदा में भंडारा आज

बहादुरगढ़। गांव कानोंदा स्थित जाहरवीर गोगा मंदिर में आज रविवार को गोगा नवमी के उपलक्ष्य में 16वें देशी घी के भंडारे का आयोजन गोगाजी चेरिटेबल ट्रस्ट व ग्रामवासियों के सहयोग से किया जा रहा है। बिजेंद्र नंबरदार ने जानकारी देते हुए बताया कि भंडारे में छिल्लर-छिकारा क्षेत्र के गांवों, राजनीतिक, सामाजिक हस्तियों को आमंत्रित किया गया है। विभिन्न शहरों में बसे गांव के लोग भी यहां आकर पूजा अर्चना करेंगे।

मातनहेल में युवक ने फंदा लगाया

झज्जर। क्षेत्र के गांव मातनहेल की बणी में एक युवक ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। युवक का शव एक पेड़ लटका मिला। सूचना मिलने पर पुलिस ने मौके पर पहुंच कर शव को कब्जे में लेकर उसे पोस्टमार्टम के लिए स्थानीय नागरिक अस्पताल भिजवाया। मृतक की पहचान जिले के गांव सेहलंगा निवासी करीब 22 वर्षीय योगेश के तौर पर हुई है। मामले के जांच अधिकारी जोगिंद्र ने बताया कि योगेश बीएससी की पढ़ाई कर रहा था तथा अपने मामा के यहां नीमली गांव में रहता था। शुक्रवार को उसने मातनहेल बणी में जाकर फांसी लगा ली। इस मामले में एक सुसाइड नोट भी मिला है जिसमें किसी को भी मौत का जिम्मेवार नहीं ठहराया गया। मृतक के मामा कुलदीप के बयानों पर इत्तिफाकिया कार्रवाई कर पोस्टमार्टम कराने के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया।

नूना माजरा में मकान में चोरी व तोड़फोड़

बहादुरगढ़। गांव नूना माजरा में स्थित एक मकान में चोरी और तोड़फोड़ करने का मामला सामने आया है। गांव के ही एक युवक व उसके साथी पर वारदात को अंजाम देने का आरोप है। सदर थाना पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस को दी शिकात में नूना माजरा की निवासी भावना ने कहा है कि रात करीब ढाई बजे मकान में यह वारदात हुई है। जब उन्होंने देखा तो सारा सामान बिखरा पड़ा था। सामान के साथ तोड़फोड़ की गई थी। इस दौरान दो घड़ी और करीब तीन हजार रुपये की नकदी भी गायब थी। तोड़फोड़ में भी काफी नुकसान हुआ है। इसके बाद हमने कैमरे चेक किए तो फुटेज में गांव का ही एक युवक नजर आया। उसके दूसरे साथी को हम नहीं जानते। उधर, सूचना पाकर पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू की। पुलिस ने भावना की शिकायत पर केस दर्ज कर लिया है। जल्द ही मामले को सुलझाने की बात कही जा रही है।

ऑपरेशन सिंदूर व महादेव से पूरी दुनिया ने देखा भारत का पराक्रम : रामचंद्र जांगड़ा

देशभक्ति की उमंग के साथ मना 79वां स्वतंत्रता दिवस

झज्जर। देश का 79वां स्वतंत्रता दिवस समारोह रोडवेज वर्कशॉप परिसर में धूमधाम व देशभक्ति से सराबोर माहौल में मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्यातिथि राज्यसभा सांसद रामचंद्र जांगड़ा ने समारोह का शुभारंभ किया। ध्वजारोहण के साथ ही राष्ट्रगान की धुन ने पूरे वातावरण को देशभक्ति के रंग में रंग दिया। मुख्यातिथि ने परेड का निरीक्षण किया और सलामी ली। हरियाणा पुलिस, होमगार्ड और विद्यालयों की अनुशासित एनसीसी की टुकड़ियों ने शानदार मार्च पास्ट करते हुए देश की एकता, अनुशासन और वीरता का संदेश दिया। स्वतंत्रता दिवस समारोह से पहले राज्यसभा सांसद रामचंद्र जांगड़ा ने शहीद स्मारक पर पुष्प अर्पित कर वीर शहीदों को श्रद्धांजलि दी। इस दौरान अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि आज मुझे यह कहते हुए बड़ा गर्व का अनुभव हो रहा है कि हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री के नेतृत्व में सात मई की रात को हमारे बहादुर सुरक्षाबलों ने ऑपरेशन सिंदूर को अंजाम दिया। यह एक सटीक और साहसिक अभियान था, जिसमें हमारी सेना ने पाकिस्तान की सरजमीं पर मौजूद आतंकवाद के नौ ठिकानों को ध्वस्त किया। इसके पश्चात एक और निर्णायक कार्रवाई की गई और ऑपरेशन महादेव चलाकर हमारे सुरक्षाबलों ने पहलगाम हमले में शामिल आतंकियों को समाप्त करने का काम किया।

सांस्कृतिक प्रस्तुतियों में झलका देश प्रेम

परेड के पश्चात, रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने सभी का मन मोह लिया। बाल कलाकारों और युवाओं ने देशभक्ति गीत, लोकनृत्य और नाट्य प्रस्तुतियों के माध्यम से आजादी के मतवालों के संघर्ष और बलिदान को जीवंत कर दिया। तालियों की गड़गड़ाहट और भारत माता की जय के नारों से पूरा परिसर गूंज उठा। मुख्यातिथि ने सभी प्रतिभागी स्कूलों को 21-21 हजार रुपये की प्रोत्साहन राशि देने की घोषणा की। समारोह में मुख्य अतिथि ने स्वतंत्रता सेनानियों के परिजनों, युद्ध वीरांगनाओं, शौर्य पदक विजेता पूर्व सैनिकों को सम्मानित किया गया

बहादुरगढ़ में विधायक राजेश जून ने ध्वजारोहण कर ली परेड की सलामी

सांस्कृतिक कार्यक्रमों की रही धूम

बहादुरगढ़। शहर के डॉ भीमराव अंबेडकर स्टेडियम में शुक्रवार को देश का 79वां स्वतंत्रता दिवस समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। विधायक राजेश जून ने बतौर मुख्य अतिथि ध्वजारोहण कर परेड की सलामी ली। इससे पहले उन्होंने शहीदी स्मारक स्थल पर पुष्प अर्पित कर नमन किया। मुख्य अतिथि राजेश जून देश की आजादी के लिए अपने प्राणों को न्योछावर करने वाले सभी ज्ञात-अज्ञात शहीदों के साथ जांबाज जवानों को नमन किया। विधायक राजेश जून ने युद्ध वीरांगनाओं को सम्मानित किया। स्वतंत्रता दिवस समारोह में स्कूली छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी। विभिन्न गतिविधियों में अग्रणी रहने वाली टीमों को विधायक राजेश जून ने पुरस्कृत किया। एसडीएम नसीब कुमार ने प्रशासन की तरफ से शॉल और स्मृति चिह्न भेंटकर विधायक का स्वागत सम्मान किया। इस मौके पर तहसीलदार सुदेश मेहरा, नायब तहसीलदार अनिल कुमार, एसीपी दिनेश कुमार, एसीपी प्रदीप खत्री, ईओ अरुण नांदल, सचिव प्रवीण कुमार, सुनील हुड्डा, बीईओ शेर सिंह, पूर्व जिला अध्यक्ष राजपाल जांगड़ा, संजीव सैनी, अशोक गुप्ता, सुमित्रा तेवतिया व पूजा व अन्य मौजूद रहे।

स्वतंत्रता दिवस से जुड़ी बलिदानियों की महान गौरवगाथा : सांगवान

दादरी विधायक ने किया ध्वजारोहण

बेरी। हर घर तिरंगा थीम के साथ भागलपुरी चौक स्थित खेल स्टेडियम में 79वां स्वतंत्रता दिवस समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। चरखी दादरी के विधायक सुनील सतपाल सांगवान ने बतौर मुख्यातिथि ध्वजारोहण कर परेड की सलामी ली। इससे पहले उन्होंने स्वतंत्रता सेनानी और हरियाणा के प्रथम मुख्यमंत्री पंडित भगवत दयाल शर्मा समाधि स्थल पर पुष्प अर्पित कर नमन किया। इस दौरान उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि स्वतंत्रता दिवस के साथ हमारे देशभक्तों के त्याग और बलिदान की एक लंबी गौरवगाथा जुड़ी हुई है। देश को आजादी दिलाने के लिए शहीद भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव, चंद्रशेखर आजाद और उधम सिंह जैसे अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने लंबा संघर्ष किया। उन्होंने देश की आजादी के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर करने वाले सभी ज्ञात-अज्ञात शहीदों के साथ-साथ उन जांबाज जवानों को नमन किया,जिन्होंने आजादी के बाद देश की रक्षा के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा दी। वहीं कार्यक्रम के दौरान स्कूली विद्यार्थियों ने रंगारंग सांस्कृतिक और देशभक्ति से ओतप्रोत अपनी प्रस्तुतियां देकर सभी का मन मोह लिया।

...स्वतंत्रता दिवस का पैकेज पेज 12 पर

निर्माणधीन मकान की छत गिरने से मजदूर दबे, आसौदा में गिरी राजकीय स्कूल की छत

- शहर की छिकारा कॉलोनी में हादसा
- बरसात के दौरान निर्माणधीन मकान की छत का कुछ हिस्सा गिर गया
- हादसे में चार श्रमिक घायल हो गए

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

शहर की छिकारा कॉलोनी में हादसा हो गया। यहां बरसात के दौरान निर्माणधीन मकान की छत का कुछ हिस्सा गिर गया। इससे मजदूर सहित चार लोग घायल हो गए। सभी की हालत खतरे से बाहर है। वहीं, बरसात के कारण बिजली घर में भी छज्जे का मलबा गिर गया। हादसा 15 अगस्त की दोपहर को हुआ। जानकारी के अनुसार, यहां छिकारा कॉलोनी में देवेंद्र नाम के एक शख्स द्वारा मकान का निर्माण कराया जा रहा है। कुछ समय पहले ही छत डाली गई थी। शुक्रवार को बरसात के दौरान छत को सहारा देने के लिए लगा स्पोर्टर हट गया। इससे छत के आगे का हिस्सा गिर गया। इस दौरान निर्माण कार्य में लगे महेंद्र, लद्दन निवासी यूपी, राहुल निवासी छिकारा कॉलोनी घायल हो गए। इतना ही नहीं, मजदूरों के पास किसी काम से आया काकू भी चपेट में आ गया। हादसे में चारों को काफी चोट आई। आसपास के लोग इकट्ठे हुए और घायलों को अस्पताल में ले जाया गया।

बिजली घर का छज्जा गिरा

हादसे के बाद स्कूल का निरीक्षण करने पहुंचे खंड शिक्षा अधिकारी

बहादुरगढ़। इलाके में सरकारी शिक्षण संस्थानों के भवनों की हालत दिनोंदिन बदहाल होती जा रही है। कई विद्यालयों के कमरे पहले ही कंडम घोषित किए जा चुके हैं, वहीं कई इमारतें इसी स्थिति की ओर बढ़ रही हैं। आए दिन कहीं न कहीं छत से मलबा गिरने के मामले सामने आ रहे हैं। ताजा मामला गांव आसौदा सिवान के राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय का है। यहां वीरवार को बरसात के बीच एक कमरे की छत का हिस्सा अचानक टूटकर नीचे गिर गया। छत पर बड़ा छेद बन गया। गनीमत रही कि कोई छात्रा या शिक्षक इसकी चपेट में नहीं आया।

बहादुरगढ़। मलबा गिरने से स्कूल के कमरे की छत में बना छेद।

स्कूल का कुछ हिस्सा पहले से कंडम घोषित

बताया जाता है कि विद्यालय के कुछ हिस्सों को पहले ही कंडम घोषित किया जा चुका है और वहां बच्चों को बैठाने पर रोक है। हालांकि हादसे के समय उस हिस्से में बच्चे मौजूद थे या नहीं, यह स्पष्ट नहीं है। सूचना मिलने पर खंड शिक्षा अधिकारी शेर सिंह ने दौरा किया। बीईओ का कहना है कि जब वे स्कूल पहुंचे तो प्रिंसिपल मौजूद नहीं थे। भवन की मरम्मत के लिए बजट जारी हुआ या नहीं, अब तक क्या कदम उठाए गए, यह जांच का विषय है। बीईओ ने बताया कि मामले की जांच के लिए कमेटी गठित की जाएगी और रिपोर्ट आने के बाद आगे की कार्रवाई होगी।

लगातार तीसरे दिन हुई बारिश से जलभराव

बहादुरगढ़। इलाके में लगातार तीन दिन से बारिशभरा मौसम है। जन्माष्टमी पर शनिवार दोपहर भी झमाझम बारिश हुई। लगभग साढ़े 22 एमएम बरसात दर्ज की गई। बरसात से कई जगह जलभराव हो गया। शनिवार की शुरुआत सुबह तेज धूप के साथ हुई थी लेकिन 12 बजे के आसपास मौसम बदल गया और तेज बरसात शुरू हुई। काफी देर तक बरसने के बाद मौसम खुला लेकिन आसमान में बादल छाए रहे। देर शाम तक भी बारिश की संभावना बनी हुई थी। दरअसल, बीते तीन दिन से यहां लगातार बारिश हो रही है। आसमान में बादल छाए रहते हैं। कभी रात को तो कभी दिन में हलकी या तेज बारिश हो जाती है। वीरवार को 13 एमएम, शुक्रवार को साढ़े 14 एमएम और शनिवार को दोपहर तीन बजे तक लगभग साढ़े 22 एम एम बरसात हो चुकी थी। आगामी कुछ दिनों तक इलाके में बरसात के आसार बने हुए हैं।

डीआरडीओ की एसपीआईसी टीम पर पिस्तौल तानकर जान से मारने की धमकी

बहादुरगढ़। डीआरडीओ के अंतरगत आने वाली एसपीआईसी की एक टीम पर बहादुरगढ़ इलाके में पिस्तौल तानकर जान से मारने की धमकी देने का मामला सामने आया है। आसौदा थाना पुलिस ने मामले में छानबीन शुरू कर दी है। मामला जसोरखेड़ी के निवासी कृष्ण से जुड़ा है। कृष्ण दिल्ली कैंट स्थित एसपीआईसी कार्यालय में बतौर ड्राइवर कार्यरत है। जानकारी के अनुसार, गत 24 जुलाई को कृष्ण कुमार के खिलाफ केंद्रीय सिविल सेवा नियम 1965 के नियम-14 के तहत एक आरोपपत्र जारी किया गया था। विभाग द्वारा कई बार चार्जशीट उसके पर डाक से भेजी गई, लेकिन रिसीव न होने के कारण हर बार डाक वापस लौट गई। इसके बाद सात अगस्त को एसपीआईसी की ओर से चार सदस्यीय टीम गठित कर चार्जशीट देने के लिए कृष्ण के यहां भेजी गई। आरोप है कि जब वे कृष्ण कुमार के घर पहुंचे तो उनके घर वालों ने इंतजार करने को कहा। कुछ देर बाद आरोपी वहां आया तो उसने कमरा बंद कर लिया और टीम सदस्य प्रदीप कुमार पर पिस्तौल तान दी। गाली-गलौच करते हुए सरकारी टीम को जान से मारने की धमकी दी। इतना ही नहीं, चेतावनी देते हुए कहा कि एसोसिएट डायरेक्टर व साइंटिस्ट-जी संजय पाल को भी परिणाम भुगतने होंगे। उसने चार्जशीट लेने से साफ इंकार कर दिया और चेतावनी दी कि अगर टीम तुरंत वहां से नहीं गई तो उन्हें बुरा अंजाम भुगतना पड़ेगा। जिसके बाद टीम वहां से लौट गई और अपने वरिष्ठ अधिकारियों को मामले से अवगत कराया। फिर एसपीआईसी ने बहादुरगढ़ पुलिस को लिखित शिकायत दी। शिकायत में कहा गया है कि कृष्ण ने सरकारी कर्मचारियों के आधिकारिक कर्तव्यों में बाधा डालते हुए उन्हें हथियार के बल पर धमकाया और जान से मारने की कोशिश की। वहीं, इस शिकायत पर आसौदा थाने में विभिन्न धाराओं के तहत केस दर्ज किया गया है।

■ विभाग के चालक को चार्जशीट देने पहुंची थी टीम, शिकायत पर आसौदा थाने में केस दर्ज

पुलिस प्रशासन ने किए सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

जिले भर में जन्माष्टमी का पर्व धूमधाम से मनाया गया। जन्माष्टमी पर्व को लेकर लोगों में उत्साह का माहौल रहा। सांय ढले मंदिरों में श्रद्धालुओं भीड़ उमड़ी और मंदिर परिसर हाथी घोड़ा पालकी जय कन्हैया लाल की जयकारों से गूंजते रहे। शहर के बाबा प्रसाद गिरी मंदिर, मेन बाजार स्थित बाबा हनुमान मंदिर, बूढ़ा महादेव मंदिर, चौरासी घंटे वाला मंदिर, श्याम खाटू जी मंदिर, कांशीगिरी मंदिर, छावनी मौहल्ला स्थित दुर्गा मंदिर, पंडित लेखराज मंदिर, गोपाल मंदिर, दुर्गा भवन मंदिर सहित तमाम मंदिरों की खूब साज सज्जा की गई, वहीं झांकियां भी आर्कषण का केंद्र रही। पर्व के चलते जिला पुलिस द्वारा सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए है।

जन्माष्टमी का उत्साह, मंदिरों में उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़

मंदिरों के आसपास सादे कपड़ों में पुलिस रही तैनात

जन्माष्टमी पर्व को लेकर जिलाभर में सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए है। प्रवक्ता ने बताया कि पुलिस आयुक्त डॉक्टर राजश्री सिंह द्वारा सभी थाना व चौकी प्रभारियों को शांति व कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए निर्देश दिए गए है। पीसीआर व राईडर को भी अपने-अपने क्षेत्र में निरंतर गश्त करने के निर्देश दिए गए है। भीड़-भाड़ वाले स्थानों सादे कपड़ों में भी पुलिस कर्मचारियों की तैनाती की गई है। देर रात तक श्रद्धालु मंदिर में पहुंचते रहे और जन्माष्टमी का पर्व मानते रहे।

...संबंधित समाचार पेज 11 पर

नाले का स्लैब टूटने से धंस गया गेहूं से भरा ट्रक

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

झज्जर रोड पर नाले का स्लैब टूटने से गेहूं से भरा ट्रक धंस गया। गनीमत रही कि कोई चपेट में नहीं आया। हालांकि ट्रक काफी देर तक धंसा रहने के कारण गली में आवागमन बाधित रहा, वहीं झज्जर रोड पर भी वाहनों की रफ्तार थम गई। झज्जर रोड पर मुख्य डाकघर के पास शनिवार की सुबह यह घटना हुई। दरअसल, यहां मौजूद एक राशन डिपो पर गेहूं की सप्लाई लेकर एक ट्रक आया था। झज्जर रोड से गुरुद्वारे वाली गली में बैक होते वक्त जब ट्रक का पिछला पहिया नाले के स्लैब पर टिका तो अचानक टूट गया और ट्रक का पहिया उसमें धंस गया। काफी देर तक ट्रक झुका रहा, जिससे यातायात व्यवस्था गड़बड़ा गई। बाद में ट्रक को खाली किया गया और फिर उसे गड्ढे से बाहर निकाला जा सका। ट्रक पर लगा तिरपाल कई जगह से फटा हुआ था। इस वजह से बरसात में गेहूं भीग गया। बारिश के पानी से गेहूं की बोरी भीगने पर लोगों ने विभाग की लापरवाही पर भी सवाल उठाए।

स्वतंत्रता दिवस पर छाए युवा

बहादुरगढ़। स्विमिंग पूल में तैरते हुए तिरंगा लहराते अनिल खत्री व अन्य।

तैराकी करते हुए लहराया तिरंगा

बहादुरगढ़। शहर की चैंपियंस एक्वेटिक एकेडमी के स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में स्वतंत्रता दिवस समारोह धूमधाम के साथ मनाया गया। भारतीय तैराकी संघ एवं हरियाणा ओलंपिक संघ के उपाध्यक्ष अनिल खत्री ने स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स की छत पर ध्वजारोहण किया और सलामी दी। इसके बाद तैराकों के साथ मिलकर स्विमिंग पूल में तिरंगा परेड भी निकाली। तैराकों ने हाथों में तिरंगा लेकर तैरते हुए देश के वीरों को अपनी सलामी दी। इस अवसर पर सुरेश जून व एनआरआई अनिल भी मौजूद रहे।

■ एसआईपी के अलावा भी कुछ विकल्प दे सकते हैं बढ़िया मुनाफा

■ मोटा पैसा कमाने के लिए आपको रणनीति बनाकर आगे बढ़ना होगा

■ रिटायरमेंट, बच्चों की शिक्षा या घर के लिए एसआईपी पर्याप्त नहीं

करोड़पति बनना है तो आप जान लें निवेश के कुछ 'ब्लॉकबस्टर' टिप्स

निवेश मंत्रा

बिजनेस डेस्क

आजकल ज्यादातर लोग, स्पेशली युवा, अपनी फाइनेंशियल प्लानिंग को पूरा करने के लिए सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) को अपना रहे हैं। एसआईपी शुरू करना फाइनेंशियल अनुशासन की दिशा में एक शानदार पहला कदम है, लेकिन, क्या केवल एसआईपी शुरू कर देना ही आने वाले कल के लिए काफी है? असल में लंबी अवधि के टारगेट जैसे रिटायरमेंट, बच्चों की शिक्षा या घर खरीदने के लिए, केवल एसआईपी करना पर्याप्त नहीं है। इसके लिए एक संपूर्ण और मजबूत प्लानिंग की आवश्यकता होती है। तो फिर आइए इस रिपोर्ट के जरिये जानते हैं निवेश के कुछ ब्लॉक बस्टर कदम जो आपको करोड़पति बनने में अहम भूमिका निभा सकते हैं और आपकों कम समय में ही अच्छा मुनाफा दिलवाने में सक्षम हैं।

फाइनेंशियल टारगेट को परिभाषित करें

एसआईपी तो बस एक निवेश का एक जरिया है, लेकिन टारगेट क्या है? सबसे पहले, आपको अपने सभी दीर्घकालिक लक्ष्यों को साफ रूप से परिभाषित करना चाहिए और एक गोल बनाकर आगे बढ़ना होगा।

- **लक्ष्यों को पहचानें :** क्या आपका टारगेट 10 साल में बच्चों की हाई एजूकेशन है, 20 साल में रिटायरमेंट है, या 5 साल में घर के लिए डाउन पेमेंट है?
- **लागत का अनुमान लगाएं :** हर टारगेट के लिए जरूरी राशि का अनुमान लगाएं. इसमें फ्यूचर की महंगाई को भी शामिल करें. उदाहरण के लिए, अगर आज बच्चों की इंजीनियरिंग की पढ़ाई पर 20 लाख रुपये खर्च होते हैं, तो 15 साल बाद महंगाई के साथ यह राशि कहीं अधिक होगी।
- **क्यों जरूरी :** जब आपको पता होगा कि आपको कब और कितने पैसे की जरूरत हो सकती है, तभी आप सही निवेश रणनीति बना पाएंगे।

पोर्टफोलियो को विविधतापूर्ण बनाएं

- एसआईपी तो इक्विटी में है, लेकिन क्या इतना काफी है? 'अपने सारे अंडे एक ही टोकरी में न रखें' यह निवेश का सबसे पुराना और सबसे अहम नियम है।
- **इक्विटी के अलावा निवेश करें :** हमेशा अपने पोर्टफोलियो में सिर्फ एसआईपी ही ना रखें। उसमें इक्विटी के साथ-साथ डेट और अन्य संपत्तियों का मिश्रण भी होना ही चाहिए।
- **विविधता के विकल्प :** आप अपनी रिस्क लेने की क्षमता अनुसार पब्लिक प्रॉविडेंट फंड (पीपीएफ), फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी), राष्ट्रीय पेंशन योजना (एनपीएस), और यहां तक कि सोना या रियल एस्टेट जैसे ऑप्शन में भी निवेश कर सकते हैं।
- **क्यों जरूरी :** यह आपके पोर्टफोलियो में स्थिरता ला सकता है। यानी कि यदि शेयर बाजार में गिरावट आती है, तो आपके दूसरे निवेश आपके पोर्टफोलियो को गिरने से बचाते हैं।

बीमा और आपातकालीन निधि बनाएं

- आपकी यात्रा की सुरक्षा कैसे होगी? यानी कि एक मजबूत फाइनेंशियल योजना की नींव सुरक्षा पर टिकी होती है। अगर आप बिना बीमा और इमरजेंसी के निवेश करते हैं, तो एक भी दुर्घटना आपकी पूरी योजना को ध्वस्त कर सकती है।
- **आपातकालीन निधि :** कम से कम 3 से 6 महीने के मासिक खर्चों के बराबर की राशि एक ऐसे खाते में रखें, जिसे आप आसानी से निकाल सकें। ये इमरजेंसी फंड नौकरी छूटने या मेडिकल इमरजेंसी जैसी स्थितियों में आपके एसआईपी को तोड़ने से बचाएगा।
- **पर्याप्त बीमा :** अपने परिवार को फाइनेंशियल रूप से सेफ रखने के लिए पर्याप्त लाइफ इंश्योरेंस (खासकर टर्म प्लान) और हेल्थ इंश्योरेंस जरूर लें।
- **क्यों जरूरी :** यह आपके लॉन्ग टर्म निवेश को अप्रत्याशित वित्तीय झटकों से बचाता है।

निवेश की राशि को बढ़ाएं

- आपकी इनकम तो बढ़ेगी, तो निवेश क्यों नहीं? जैसे-जैसे आपकी आय बढ़ती है, वैसे-वैसे आपके निवेश को भी बढ़ना चाहिए।
- **क्या करें :** हर साल अपनी एसआईपी की राशि को अपनी आय में हुई ग्रोथ के अनुसार 10-15% तक बढ़ाएं। इसे 'स्टेप-अप एसआईपी' कहा जाता है। ऐसा करने से निवेशक कम समय में अपने टारगेट तक पहुंच सकते हैं और महंगाई के प्रभाव को भी कम कर सकते हैं।
- **क्यों करें :** मुद्रास्फीति आपके पैसे की क्रय शक्ति को घटाती है। निवेश को बढ़ाकर आप यह तय करते हैं कि आपके लक्ष्य की वाकई में लागत कवर हो।

योजना की समय पर समीक्षा करें

- क्या आपकी गाड़ी सही रास्ते पर है? आपकी वित्तीय यात्रा एक सीधी रेखा नहीं है. इसमें कई मोड़ आते हैं।
- **क्या करें :** साल में आप कम से कम एक बार तो जरूर ही अपनी वित्तीय योजना और निवेश पोर्टफोलियो की समीक्षा करें। इसमें देखें कि क्या आपके निवेश आपके लक्ष्यों के अनुरूप प्रदर्शन कर रहे हैं या फिर नहीं। अगर आपके जीवन में कोई बड़ा बदलाव (जैसे शादी, बच्चा या नई नौकरी) आता है, तो अपनी योजना में जरूरी बदलाव करना चाहिए।
- **क्यों जरूरी :** समीक्षा करने से आप यह तय करते हैं कि आप हमेशा सही रास्ते पर हैं और अपने टारगेट को समय पर प्राप्त कर पाएंगे।

एसआईपी सिर्फ एक मंजिल

- अब आप समझ रहे होंगे कि एसआईपी शुरू करना एक बहुत अच्छी शुरुआत है, लेकिन यह मंजिल नहीं है। अपने लॉन्ग टर्म के फाइनेंशियल टारगेट को पाने के लिए एक पूरी प्लानिंग की जरूरत होती है, जिसमें लक्ष्य-आधारित इन्वेस्टमेंट, विविधीकरण, सुरक्षा और नियमित समीक्षा शामिल हो। ■

पत्नी के साथ मिलकर बनाएं कल की प्लानिंग

- 1, 2 नहीं इन 5 ऑप्शन को फॉलो करके फुल मौज में कटेगा बुढ़ापा
- रिटायरमेंट प्लानिंग केवल एक व्यक्ति नहीं, पूरे परिवार की जिम्मेदारी
- कपल मिलकर सही समय पर निवेश और फाइनेंशियल प्लान बनाएं

अपने भविष्य को सुरक्षित बनाने के लिए अपनी पत्नी के साथ मिलकर अच्छी प्लानिंग करें। इससे आपका बुढ़ापा मस्ती में कटेगा। कहा भी गया है कि रिटायरमेंट प्लानिंग एक व्यक्ति की नहीं, बल्की पूरे परिवार की साझा जिम्मेदारी है। आने वाले कल को सुरक्षित करने के लिए सही समय पर सही इन्वेस्टमेंट प्लानिंग की बहुत जरूरत होती है। यही कारण है कि समय रहते रिटायरमेंट की प्लानिंग करना भी बहुत जरूरी होता है। आज के समय में रिटायरमेंट प्लानिंग केवल एक व्यक्ति के लिए नहीं, बल्कि पूरे परिवार के लिए एक शेयर होने वाली जिम्मेदारी होती है, खासकर कपल के लिए। अब आप रिटायरमेंट के लिए अपनी पत्नी के मिलकर बेहतरीन प्लानिंग करें। वाइफ के साथ मिलकर प्लानिंग बनाने से आप शानदार फ्यूचर बना सकते हैं।

पत्नी के टारगेट पर चर्चा करें

सबसे पहला और सबसे जरूरी कदम होता है कि एक-दूसरे के साथ खुलकर बात करना चाहिए। यह प्लान करें कि रिटायरमेंट के बाद आप किस तरह की लाइफ को जीना चाहते हैं, जैसे कि क्या आप यात्रा करना चाहते हैं, कोई नया व्यवसाय शुरू करना चाहते हैं, या शांतिपूर्ण जीवन बिताना चाहते हैं? जब आप दोनों ये तय कर लेंगे तभी आप अच्छी बचत अपने आने वाले कल के लिए कर सकेंगे।

खर्चों का आकलन करें

रिटायरमेंट के बाद की लाइफ के लिए जरूरी मंथली खर्चों का अनुमान लगाना बहुत जरूरी होता है। इसमें घर का किराया या ईएमआई, खाने-पीने का खर्च, हेल्थ और मनोरंजन जैसे सभी खर्च शामिल करें। पार्टनर के साथ मिलकर एक ज्वाइंट बजट बनाएं जो आपकी फिलहाल की इनकम और खर्चों को पेश करता हो। यह आपको यह समझने में मदद करेगा कि आप कहां बचत कर सकते हैं और कहां अनावश्यक खर्चों में कटौती की जा सकती है।

बीमा स्कीम की समीक्षा करें

हर किसी के लिए एक सेफ रिटायरमेंट के लिए बीमा बहुत जरूरी होता है। अपनी हेल्थ बीमा पॉलिसियों की समीक्षा करें और तय करें कि वे रिटायरमेंट के बाद के चिकित्सा खर्चों को कवर करती हैं.आपकी बढ़ती उम्र के साथ मेडिकल खर्च भी बढ़ते हैं, तो इसलिए पर्याप्त कवरेज होना हर किसी के लिए बहुत जरूरी होता है।

टाइम टू टाइम समीक्षा करें

आपकी रिटायरमेंट योजना हमेशा एक ऐसी नहीं रह सकती है वो इसलिए जीवन में बदलाव आते रहते हैं, तो ऐसे नें अपनी वित्तीय योजना की समय-समय पर समीक्षा करना जरूरी है और उसमें जरूरत के अनुसार बदलाव करना अहम होता है। हर साल या कुछ सालों में अपने निवेश, लक्ष्यों और बजट की समीक्षा करें ताकि आप सही रास्ते पर बने रहें। यानी कि ये कदम आपको और आपके जीवनसाथी को फाइनेंशियल स्थिरता और सुरक्षा के साथ-साथ एक आरामदायक और खुशहाल रिटायरमेंट के लिए तैयार करने में मदद कर सकते हैं। ■

आज ही बना लें मुश्किल वक्त के लिए 'एटीएम'

मुसीबत हम सभी की लाइफ में कब आ जाए हममें से कोई नहीं जानता है, लेकिन मुसीबत से पार पाने के लिए इमरजेंसी फंड का होना बहुत जरूरी होता है। असल में इमरजेंसी फंड एक ऐसी धनराशि होती है, जिसे आप किसी भी अप्रत्याशित खर्च या वित्तीय संकट के समय यूज करने के लिए अलग से रखते हैं। यह आपको अचानक आई परेशानियों, जैसे नौकरी छूटना, मेडिकल इमरजेंसी या घर की मरम्मत आदि से निपटने में मदद करता है। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे कि इमरजेंसी फंड कैसे तैयार करें।

बजट बनाएं और लक्ष्य तय करें : आप सबसे पहले, अपने मंथली खर्चों का हिसाब लगाएं। इसके बाद आपयह तय करें कि आपको कम से कम 3 से 6 महीने के खर्चों को कवर करने के लिए कितने फंड की जरूरत पड़ा सकती है। यह साफ टारगेट आपको बचत करने में मदद कर सकता है।

छोटे कदम से शुरुआत करें : लाइफ में हमेशा एक बड़ा फंड बनाने में सभी को टाइम लगता है। तो आप हर महीने अपनी इनकम का एक छोटा हिस्सा बचाना शुरू कर सकते हैं, भले ही यह छोटी राशि हो, नियमित रूप से बचत करने से यह समय के साथ एक बड़ा फंड बन जाएगा।

बचत को ऑटोमेट करें : आप हमेशा के लिए बचत को अपनी आदत बनाने के लिए, अपनी सैलरी अकाउंट से एक अलग बचत खाते में हर मंथ एक फिक्स अमाउंट का ऑटोमैटिक ट्रांसफर सेट कर दें। ऐसा करने से आपकी सैलरी आते ही इमरजेंसी के लिए बचत हो जाएगी और आप इसे खर्च करने से बच जाएंगे।

कर्ज कम करने को प्राथमिकता दें : तो अगर आप पर कोई हाई ब्याज वाला कर्ज (जैसे क्रेडिट कार्ड का कर्ज) है, तो सबसे पहले उसे चुकाने पर ध्यान देना चाहिए। हमेशा कर्ज से पूरी तरह से फ्री होने के बाद, आप अपने इमरजेंसी फंड के लिए अधिक बचत कर सकते हैं।

अलग और सुरक्षित जगह पर रखें : अपने इमरजेंसी फंड को अपने सामान्य बचत खाते से अलग रखें। इसको ऐसे ऑप्शन में इन्वेस्टमेंट करें जो सेफ हो और जिन्हें जरूरत पड़ने पर आसानी से निकाला भी जा सके।

कारोबार आइडिया

■ अगर आप ऐसा बिजनेस चाहते हैं जिसकी मांग कभी कम न हो, तो आटे का बिजनेस करें

■ भारत के कई हिस्सों में रोटी रोजमर्रा के भोजन का अहम हिस्सा, गुणवत्तापूर्ण आटे की डिमांड हमेशा रहती है व कमाई की संभावना लगातार

बिजनेस डेस्क

2.50 लाख में शुरू कर सकते हैं आटे का बिजनेस, हर महीने कर लेंगे मोटी कमाई

अगर आप भी नौकरी के अलावा बिजनेस करके खुद को स्टेबल कर मोटी कमाई करना चाहते हैं तो आपके लिए आटे का बिजनेस बेहतरीन विकल्प हो सकता है। इससे आप कम लागत में अच्छी कमाई का जुगाड़ लगा सकते हैं। रोटी भारतीय खानपान का अहम हिस्सा है, इसलिए इस बिजनेस की मांग हमेशा बनी रहती है। हर कोई चाहता है कि उसका बिजनेस लगातार चलता रहे और उसकी मांग कभी कम न हो। ऐसे में आटे का बिजनेस एक सुरक्षित और भरोसेमंद विकल्प बन सकता है। इसे शुरू करने के लिए लगभग 2.50 लाख रुपये तक का निवेश पर्याप्त है। भारत के उत्तर, मध्य और पूर्वी राज्यों में रोटी रोजना के खानपान का जरूरी हिस्सा है, जिससे गेहूं के आटे की खपत हमेशा बनी रहती है। यही कारण है कि इस कारोबार में मंदी आने की संभावना बेहद कम है। अगर आप सही मशीनरी, साफ-सुथरी प्रोसेसिंग और आकर्षक पैकिंग का इस्तेमाल करें, तो ये बिजनेस जल्दी ही स्थायी कमाई का जरिया बन सकता है। गुणवत्तापूर्ण आटे की हमेशा डिमांड रहती है और ग्राहक अच्छे ब्रांड को पसंद करते हैं। सही प्लानिंग के साथ आप कम लागत में इस बिजनेस की मजबूत शुरुआत कर सकते हैं और धीरे-धीरे इसे बड़े स्तर पर ले जा सकते हैं।

कहां से मिलेगा कच्चा माल

गेहूं की उपलब्धता ग्रामीण इलाकों और उनके आसपास आसानी से हो जाती है। लोग हमेशा शुद्ध और गुणवत्तापूर्ण आटा पसंद करते हैं, जिससे इस कारोबार का बाजार लगातार मजबूत बना रहता है। गेहूं के लिए किसानों से संपर्क करें। इसके बाद जैसे ही फसल आए किसानों से गेहूं खरीद लें। फसल के मौके पर आपको सस्ता अनाज मिल सकता है। इसे एक कमरे में स्टोर कर लें। इसके बाद असानी से इसकी पिसाई कर बेचते रहें। गेहूं को अच्छे से सुखाकर स्टोर करेंगे तो यह खराब नहीं होगा और रोटी भी बढ़िया आएगी। खेतों में गेहूं की फसल होली के बाद आ जाती है। इसलिए आपको गेहूं खरीदने के लिए मार्च में की प्रयास शुरू कर देना चाहिए। सीधे खेतों से बढ़िया क्वालिटी का गेहूं खरीदें और आ बनाकर बेचते रहें। सबसे पहले गेहूं की धुलाई और सुखाने की प्रक्रिया पूरी करें। इसके बाद सुखाए हुए गेहूं को मशीन से पीसकर आटा तैयार करें। अंत में इसे आकर्षक पैकिंग में भरें, ताकि ग्राहक तुरंत आकर्षित हों और ब्रांड पर भरोसा करें।

शुरुआती लागत पर ध्यान

इस बिजनेस में मशीनरी के लिए लगभग 1.25 लाख रुपये की जरूरत होगी, जिसमें चक्की, रोस्टर, सीलिंग मशीन, वजन तराजू, गैस कनेक्शन और बर्तन शामिल हैं। वर्किंग कैपिटल के रूप में करीब 1 लाख रुपये लगेंगे, जिसमें कच्चा माल, वेतन, बिजली और गैस का खर्च शामिल होगा। इसके अलावा, बिल्डिंग पर 25,000 तक खर्च रुपये आ सकता है। इस तरह कुल निवेश 2.50 लाख रुपये के आसपास होगा।

हर महीने कितना मुनाफा

मौजूदा आंकड़ों के मुताबीक, इस बिजनेस से हर महीने करीब 1.15 लाख रुपये की बिक्री हो सकती है। वहीं, मासिक खर्च करीब 1.05 लाख रुपये तक रहेगा। यानी आपको हर महीने लगभग 10,000 रुपये या उससे ज्यादा का शुद्ध मुनाफा मिल सकता है, जो बिजनेस बढ़ने के साथ और बढ़ेगा।

क्यों है आटे का बिजनेस फायदेमंद

रोटी भारतीय खानपान का अहम हिस्सा है, इसलिए इस बिजनेस की मांग हमेशा बनी रहती है। छोटे निवेश से भी इसकी शुरुआत की जा सकती है और क्वालिटी व पैकिंग पर ध्यान देकर इसे तेजी से बढ़ाया जा सकता है। सही मार्केटिंग के साथ आप इसे एक भरोसेमंद ब्रांड में बदल सकते हैं।

आटा बेचने के लिए विकल्प

- **भारत आटा बिक्री केंद्र :** सरकार द्वारा संचालित भारत आटा बिक्री केंद्रों पर आटा बेचा जा रहा है, जहां इसकी कीमत 27.50 रुपये प्रति किलोग्राम है। ये केंद्र देशभर में 800 मोबाइल वैन और 2,000 से अधिक दुकानों के माध्यम से आटा बेच रहे हैं।
- **मदर डेयरी के सफल स्टोर :** आप मदर डेयरी के सफल स्टोर से भी भारत ब्रांड का आटा खरीद सकते हैं।
- **नाफेड, एनसीसीएफ और केंद्रीय भंडार :** सरकार ने नाफेड, एनसीसीएफ और केंद्रीय भंडार के माध्यम से भारत आटा और चावल की खुदरा बिक्री शुरू की है।
- **स्थानीय बाजार :** आप अपने स्थानीय बाजार में भी आटा बेच सकते हैं या खरीद सकते हैं। कई स्थानीय बाजारों में आटे की दुकानें होती हैं जो ताजा और स्वादिष्ट आटा बेचती हैं।
- **आनलाइन प्लेटफ़ॉर्म :** आप ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म का उपयोग करके भी आटा बेच सकते हैं या खरीद सकते हैं। कई ऑनलाइन स्टोर और वेबसाइटें आटे की बिक्री करती हैं।

अब नया इनकम टैक्स कानून देगा लाखों टैक्सपेयर्स को बड़ी राहत

जानकारी

बिजनेस डेस्क

संसद ने इनकम टैक्स बिल 2025 का संशोधित रूप से पास करते समय ऐसी कई गलतियों या खामियों को ठीक कर दिया है, जो पुराने ड्राफ्ट में हो गई थीं। इन संशोधनों को पास किए जाने से देश के लाखों टैक्सपेयर्स को भारी राहत मिलेगी। केंद्र सरकार द्वारा किए गए इन बदलावों में निल टीडीएस सर्टिफिकेट, हाउस प्रॉपर्टी इनकम पर स्टैंडर्ड डिडक्शन, नॉन-एम्प्लॉइज के लिए पेंशन छूट और गुमनाम दान के नियमों में सुधार जैसे कई अहम प्रावधान शामिल हैं। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे ऐसी कुछ बहम बदलाव जो टैक्सपेयर्स के ऊपर कई अच्छे असर डालेंगे। इससे आयकर रिटर्न भरना भी आसान हो जाएगा और कोई दिक्कत नहीं आएगी।

जीरो टीडीएस सर्टिफिकेट पर सुधारी गड़बड़ी

पुरानेइनकम टैक्स एक्ट 1961 में धारा 197 के तहत निल यानी जीरो और लोअर टीडीएस सर्टिफिकेट दोनों का प्रावधान था, लेकिन नए बिल के शुरुआती ड्राफ्ट में निल शब्द हटा दिया गया था। इससे उन टैक्सपेयर्स के लिए परेशानी खड़ी हो सकती थी, जिनकी आय बेसिक छूट सीमा या सेक्शन 87ए रिबेट के बाद टैक्स फ्री होती है। संशोधित बिल में अब फिर से निल शब्द जोड़ दिया गया है, जिससे साफ हो गया है कि जरूरत पड़ने पर टैक्सपेयर्स निल टीडीएस सर्टिफिकेट ले सकते हैं। इससे अनावश्यक विवाद और रिफंड के झंझट से बचा जा सकेगा।

नॉन-एम्प्लॉइज को मिलेगी पेंशन टैक्स छूट

पहले ड्राफ्ट में कम्यूटेड पेंशन पर छूट सिर्फ कर्मचारियों को दी गई थी, जबकि मौजूदा कानून में यह सुविधा नॉन-एम्प्लॉइज को भी मिलती है, बशर्ते पेंशन अप्रूव्ड पेंशन फंड से आई हो। समिति ने इस असमानता को दूर करते हुए सिफारिश की कि नॉन-एम्प्लॉइज को भी यह छूट दी जाए. संशोधित बिल में यह बदलाव कर दिया गया है, जिससे अब सभी पात्र लोग, चाहे वे सैलरीड हों या न हों, पेंशन की पूरी राशि पर छूट पा सकेंगे।

हाउस प्रॉपर्टी इनकम पर स्टैंडर्ड डिडक्शन की स्पष्टता

नए बिल में साफ कर दिया गया है कि हाउस प्रॉपर्टी इनकम पर 30% का स्टैंडर्ड डिडक्शन म्यूनिसिपल टैक्स घटाने के बाद ही मिलेगा, जैसा कि मौजूदा कानून में है। इसके अलावा, पहले ड्राफ्ट में प्री-कंस्ट्रक्शन लोन इंटरेस्ट डिडक्शन सिर्फ सेल्फ-ऑक्यूपाइड प्रॉपर्टी के लिए था, जिससे किराए पर दी गई प्रॉपर्टी के मालिकों को नुकसान होता. संशोधित बिल में अब किराए पर दी गई या मानी हुई किराए पर दी गई प्रॉपर्टी के लिए भी यह डिडक्शन बहाल कर दिया गया है।

गोपनीय दान पर छूट के पुराने नियम बहाल

गैर-लाभकारी संगठनों के लिए पुराने कानून में कुल डोनेशन का 5% तक गुमनाम या गुप्त दान टैक्स फ्री होता था. नए बिल के पहले ड्राफ्ट में इसे गुमनाम दान का 5% कर दिया गया था, जिससे छूट का दायरा काफी घट जाता। समिति की सिफारिश के बाद संशोधित बिल में अब फिर से कुल डोनेशन का 5% वाला प्रावधान बहाल कर दिया गया है। इससे एनजीओ और चैरिटेबल ट्रस्ट पर टैक्स का बोझ नहीं बढ़ेगा।

- **संसद ने नए कानून को पास करते समय कई खामियों को ठीक किया**
- **पुराने ड्राफ्ट में कई खामियां सामने आई थी, लोगों को हो रही थी परेशानी**
- **निल टीडीएस सर्टिफिकेट, हाउस प्रॉपर्टी इनकम पर स्टैंडर्ड डिडक्शन बदले**
- **नॉन-एम्प्लॉइज के लिए पेंशन छूट और गुमनाम दान के नियमों में भी सुधार किए**

कमर्शियल प्रॉपर्टी पर नियम में सुधार

पहले ड्राफ्ट में सिर्फ ऑक्यूपाइड कमर्शियल प्रॉपर्टी को हाउस प्रॉपर्टी इनकम के टैक्स से बाहर रखा गया था, जिससे खाली पड़ी बिजनेस प्रॉपर्टी पर भी नोशनल रेंट लगने का खतरा था। समिति ने सुझाव दिया कि मौजूदा कानून की तरह ऑक्यूपाइड और वैकेंट दोनों तरह की कमर्शियल प्रॉपर्टी को बाहर रखा जाए। संशोधित बिल में यह सुधार कर दिया गया है, जिससे बिजनेस के लिए रखी गई लेकिन फिलहाल खाली पड़ी प्रॉपर्टीज पर अनावश्यक टैक्स का टेंशन टल गया है।

कर ढांचे में बदलाव

- नई कर व्यवस्था में छूट की सीमा को बढ़ाकर 12 लाख रुपये कर दिया गया है, जिससे 12 लाख रुपये तक की आय वाले व्यक्तियों को कोई कर नहीं देना होगा।
- 80एम कटौती को बहाल किया, जो कंपनियों को अंतर-कॉर्पोरेट लाभांश को कटौती के दावे की अनुमति देता है।

टीडीएस और टीसीएस में बदलाव

- टीडीएस की सीमा बढ़ा दी गई है, जैसे कि वरिष्ठ नागरिकों के लिए ब्याज आय पर टीडीएस की सीमा 50,000 रुपये से बढ़ाकर 1,00,000 रुपये कर दी गई है।
- टीसीएस की दरें बदली हैं, जैसे ओवरसीज रेमिटेंस स्कीम के तहत 7 लाख से लेनदेन पर टीसीएस की दर 0.5% से हटा दी है। अब 10 लाख से अधिक लेनदेन पर लागू होगी।

अन्य बदलाव

- धारा 206एबी और 206सीसीए को हटा दिया गया है, जिससे छोटे करदाताओं को राहत मिलेगी।
- यूनिफाइड पेंशन स्कीम (यूपीएस) के तहत कर लाभ बढ़ा दिए गए हैं।
- स्टार्टअप्स के लिए 100% कर छूट की अनुमति होगी जो 1 अप्रैल, 2030 से पहले स्थापित किए गए हैं।

नया इनकम टैक्स कानून, जिसे आयकर (नंबर 2) विधेयक, 2025 के रूप में जाना जाता है, लोकसभा द्वारा पारित किया गया है। यह विधेयक पुराने आयकर अधिनियम, 1961 की जगह लेगा और 1 अप्रैल, 2026 से लागू होगा।

दिन में निकाली गई शोभायात्राएं, रात में मंदिरों में उमड़ी भारी भीड़

जन्माष्टमी पर रही जय कन्हैया लाल की धूम

बहादुरगढ़। एक घर में भगवान कृष्ण के बाल रूप को झुलाते बच्चे। फोटो :हरिभूमि

झज्जर। जहारवीर गोगा पीर के दर्शनों के लिए मेले में उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

शनिवार को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पूरे दिन कृष्ण के भजनों की गूंज चारों ओर सुनाई देती रही। तमाम श्रद्धालु व्रत रखकर भगवान कृष्ण की भक्ति में लीन दिखाई दिए। मंदिरों में बच्चों को मनमोहक राधा कृष्ण का रूप देकर झांकियां प्रस्तुत की गई। शाम होते ही मंदिरों में लोगों की भीड़ बढ़ना शुरू हो गई। शहर के तमाम मंदिरों में जन्मोत्सव के मौके पर कार्यक्रम आयोजित किए गए। सजावट एवं झांकियां देखने वालों का तांता लगा रहा। कान्हा के भजनों पर भक्त नृत्य कर झूमते नजर आए। देर रात पूजा पाठ के बाद प्रसाद का वातावरण भक्तिमय बना रहा।

सोलह कलाओं से युक्त भगवान श्री कृष्ण का जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया। शहर में चारों ओर जन्माष्टमी की धूम देखी गई। कृष्ण जन्माष्टमी के चलते शहर में जगह-जगह तैयार की गई झांकियां लोगों के आकर्षण का केंद्र बनी रही।

रेलवे रोड स्थित श्री बालाजी हनुमान मंदिर सेवा समिति की ओर से 17वां विशाल जन्माष्टमी महोत्सव मनाया गया। सुंदर झांकियों के बीच भक्त कृष्ण जी की एक झलक पाने को आतुर रहे। जटवाड़ा मोहल्ला स्थित तीन शक्ति मंदिर प्रबंधन की तरफ से शहर में भगवान श्री कृष्ण के जीवन पर आधारित मनमोहक झांकियां निकाली गई। शहर के इस्कॉन मंदिर में भगवान राधा-कृष्ण की झांकियां श्रद्धालुओं को अपनी ओर आकर्षित कर रही थी। शहर के सत्यनारायण मंदिर, सनातन धर्म मंदिर, शिव मंदिर, दुर्गा मंदिर, राज राजेश्वरी मंदिर, राधा-कृष्ण मंदिर, मुरली मनोहर मंदिर और महावीर मंदिर में भी जन्माष्टमी पर्व उत्साहपूर्वक मनाया गया। भजन कीर्तन के बाद प्रसाद वितरित किया गया। रात तक झांकियों को देखने के लिए भक्तों का तांता लगा रहा। पंडित महेंद्र शर्मा ने बताया कि भगवान ने भाद्रपद मास की कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि की मध्यरात्रि को कंस का विनाश करने के लिए मथुरा में जन्म लिया था। भगवान स्वयं इस दिन पृथ्वी पर अवतरित हुए थे, इसलिए इस दिन को कृष्ण जन्माष्टमी के रूप में मनाया जाता है।

खानपुर गांव में हुई दो दिवसीय मेले की शुरूआत आज होगा इनामी कुश्ती दंगल

झज्जर। क्षेत्र के गांव खानपुर कलां में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व गोगा नवमी के उपलक्ष्य में लगने वाला दो दिवसीय मेला शनिवार से शुरू हो गया है। पहले दिन हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने मेला स्थल पहुंच कर जाहरवीर गोगाजी की प्रतिमा के समक्ष माथा टेक मन्नत मांगी। गोगा मेला कमेटी प्रधान अत्तर सिंह ने बताया कि रविवार को मेले के दूसरे दिन कुश्ती दंगल का आयोजन किया जाएगा। जिसमें पहला ईनाम एक लाख 21 हजार रुपये व दूसरा ईनाम 51 हजार रुपये, तीसरी कुश्ती 31 हजार रुपये की होगी। इसके अलावा भी कई ईनामी कुश्तियों में पहलवान अपना जोर आजमाएंगे। मेले में लगाई गई मीठे पानी की छबील में भी लोगों ने अपनी प्यास बुझाई। खानपुर कलां मेडी की प्रचलित कथा : खानपुर कलां की मेड़ी बारे प्रचलित कथा के अनुसार केसरिया नामक किसान गांव छोड़कर दूसरे स्थान पर जा रहा था। गांव झांसवा खेड़ा पर तेज बारिश होने लगी। तभी आकाशवाणी हुई कि मेरी मेड़ी पक्की बनवा कर अपने गांव जाओ और केसरिया को खजाने से भरा टोकरा दिखाई दिया। बताते हैं कि केसरिया ने उसी खजाने की सहायता से करीब दो सौ वर्ष पूर्व मेड़ी को पक्का बनवाया था।

बहादुरगढ़। कार्यक्रम में उपस्थित ब्रह्माकुमारियां व अतिथि। फोटो :हरिभूमि

सेक्टर-2 में ब्रह्माकुमारियों ने मनाया महोत्सव

बहादुरगढ़। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के सेक्टर-2 सेवाकेंद्र पर स्वतंत्रता दिवस व श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पावन पर्व आध्यात्मिक उल्लास के साथ मनाया गया। सेवाकेंद्र संचालिका बीके विनीता दीदी ने "सच्ची स्वतंत्रता" का आध्यात्मिक अर्थ स्पष्ट किया। राष्ट्रीय ध्वज तिरंगे के तीन रंगों का आध्यात्मिक अर्थ भी विस्तार से बताया। कार्यक्रम में भाजपा नेता दिनेश कौशिक सेवामूर्ति, दूरदर्शन के रिटायर्ड डायरेक्टर देवेंद्र सैनी और जयभगवान सोनी ने मुख्य रूप से शिरकत की। बीके भारत, बीके सुनंदा बहन, बीके नवीन, बीके रूबी व बीके अंजू बहन ने देशभक्ति गीत गाए। स्मृति, विदेही और गीत ने सुंदर नृत्य प्रस्तुत किया। बीके लक्ष्मी दीदी ने कृष्ण जन्माष्टमी को लेकर ज्ञान–युक्त प्रश्नावली आयोजित की। "नशा मुक्त भारत" बनाने का संकल्प लिया।

झज्जर। जन्माष्टमी पर्व की झांकी में बाल गोपाल का रूप धारण किए हुए नन्हें विद्यार्थी।

श्रीराधा-कृष्ण की झांकी भी मुख्य आकर्षण का केंद्र रही

झज्जर। जय मॉडर्न सीनियर सैकेंडरी स्कूल दुल्हेड़ा में स्वतंत्रता दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत अनेक देशभक्ति से ओत-प्रोत सांस्कृतिक प्रस्तुति दी गई। जालियावाला बाग नरसंहार, लाला लाजपतराय लाठचार्ज तथा शहीद राजगुरु, सुखदेव व भगतसिंह के जीवन पर आधारित जीवंत लघु नाटक की प्रस्तुति ने सभी को भावुक किया। इसके अलावा जन्माष्टमी पर्व के उपलक्ष्य में निकाली गई श्रीराधा-कृष्ण की झांकी भी मुख्य आकर्षण का केंद्र रही। विद्यालय निदेशक शगुन शर्मा ने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले विभिन्न स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि देते हुए उनके बलिदान पर प्रकाश डाला। प्राचार्य रोहित शर्मा ने जन्माष्टमी के पौराणिक महत्व से उपस्थित जनसमूह को अवगत कराया।

न्यूज डायरी

सतबीर बने बसपा जिलाध्यक्ष

बहादुरगढ़। सतबीर का मुंह मीठा कराते वरिष्ठ पदाधिकारी।

बहादुरगढ़। बहुजन समाज पार्टी ने स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर गांव सांखोल में ध्वजारोहण कार्यक्रम आयोजित किया। इस मौके पर पार्टी ने संगठन को मजबूत करने के उद्देश्य से सतबीर जाखौदा को जिला अध्यक्ष नियुक्त किया। कार्यक्रम में प्रदेश सचिव व जोन प्रभारी हेमंद्र मेहरा मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद रहे। उन्होंने कार्यकर्ताओं को जिले में पार्टी की पकड़ गांव-गांव तक मजबूत करने का आह्वान किया और नवनियुक्त जिला अध्यक्ष सतबीर जाखौदा को सम्मानित किया। इस अवसर पर जिला कार्यकारिणी सदस्य कृष्ण सांखोल, अमित तंवर, हल्का अध्यक्ष बलजीत तंवर, रवि सांखोल, नीरज सांखोल, छोटेलाल समेत बहादुरगढ़ क्षेत्र के कई कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

20 को बहादुरगढ़ आएंगे अभय चौटाला

बहादुरगढ़। इनेलो सुप्रीमो अभय चौटाला बुधवार 20 अगस्त को बहादुरगढ़ के राठी फार्म में आयोजित जनसभा को संबोधित करेंगे। इसे लेकर इनेलो नेता भूपेंद्र नफे सिंह राठी लगातार गांव-गांव जाकर लोगों से सीधा संवाद कर रहे हैं। उन्होंने शनिवार को गांव कुलासी, निलोठी, जसोर खेड़ी, लोहारहेड़ी, आसोदा, बराही सांखोल का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने चौपालों व बैठकों में जाकर ग्रामीणों को 20 अगस्त की जनसभा में शामिल होने का निमंत्रण दिया। उनके साथ रामनिवास सैनी, देवेंद्र दहिया, राज सिंह, पप्पू खत्री, हवा सिंह, शमशेर दहिया, जयभगवान, बलराज, लाला प्रधान व सुरेन आदि मौजूद रहे।

समिति ने चलाया डेंगू रोधी अभियान

बहादुरगढ़। जलभराव वाले क्षेत्र में दवा का छिड़काव करते सुरेंद्र। फोटो :हरिभूमि

बहादुरगढ़। जन्माष्टमी के पावन अवसर पर संघर्षशील जनकल्याण सेवा समिति द्वारा बहादुरगढ़ में डेंगू रोधी अभियान चलाया गया। इसके तहत महिला थाना, विवेकानंद नगर, देवीलाल पार्क, निरंकारी भवन, गोरैया ग्रीन बेल्ट, लक्ष्मी नगर, दिल्ली-रोहतक रोड पर डेंगू रोधी दवाई का छिड़काव किया गया। दिल्ली के मलेरिया विभाग में कार्यरत सुरेंद्र डाबला की अगुआई में यह अभियान चलाया गया। उन्होंने क्षेत्रवासियों से अपील की कि वे अपने आस पास बरसात का पानी न जमा होने दें। जलभराव में पेट्रोल या डीजल का छिड़काव कर दें। कूलर को हफ्ते में एक बार सूखा कर साफ करें। डेंगू से बचाव का एक ही तरीका है कि सभी जागरूक रहें और बारिश का पानी जमा न होने दें।

सीबीएसई नॉर्थ जोन प्रतियोगिताओं में एचडी स्कूल की हैंडबॉल टीम प्रथम

झज्जर। प्रशिक्षकों के साथ उपस्थित हैंडबॉल टीम के विजेता खिलाड़ी।

झज्जर। नांगल मूंदी गांव में आयोजित सीबीएसई नॉर्थ जोन-टू की हैंडबॉल प्रतियोगिता में एचडी स्कूल साल्हावास की टीम विजेता बनी है। एचडी ग्रुप सचिव हेमंत गुलिया ने बताया कि उनके स्कूल की हैंडबॉल टीम ने अंडर-14 आयु वर्ग में खेलते हुए हरियाणा, उत्तराखंड, पंजाब, व जम्मू-कश्मीर की 48 टीमों को पछाड़ते हुए प्रथम स्थान प्राप्त किया। विद्यालय की अंडर-17 हैंडबॉल टीम नॉर्थ जोन-टू में तृतीय रही। इस उपलब्धि पर एचडी ग्रुप के डायरेक्टर रमेश गुलिया ने स्कूल स्टॉफ सदस्यों, कोच व अभिभावकों को बधाई देते हुए विजेता खिलाड़ियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।

लंबित मांगों को लेकर एनएचएम कर्मचारियों ने राज्यसभा सांसद को सौंपा ज्ञापन

झज्जर। राज्यसभा सांसद को ज्ञापन सौंपते हुए एनएचएम कर्मचारी संघ प्रतिनिधि। फोटो :हरिभूमि

झज्जर। अखिल भारतीय एनएचएम कर्मचारी कल्याण संघ सदस्यों द्वारा लंबित मांगों के संबंध में राज्यसभा सांसद रामचंद्र जांगड़ा को ज्ञापन सौंप शीघ्र समाधान की अपील की गई। एनएचएम कर्मचारी कल्याण संघ के प्रतिनिधि संदीप कुमार जांगड़ा ने बताया कि वे लंबे समय से आमजन के बीच अपनी सेवाएं ईमानदारी और निष्ठा के साथ दे रहे हैं, लेकिन उनकी कई मांगें अब तक पूरी नहीं हुई हैं। यहां तक कि पिछले 3-4 महीनों से वेतन भी समय पर नहीं मिल रहा, जिससे कर्मचारियों को घर खर्च चलाने में भी कठिनाई आ रही है। उन्हें अभी तक छठे वेतन आयोग के आधार पर ही वेतन मिल रहा है, जबकि अन्य विभागों के कर्मचारियों को सातवें वेतन आयोग का लाभ पहले ही दिया जा चुका है। उन्होंने कहा कि एनएचएम कर्मचारी बार-बार प्रदेश सरकार से अपनी मांगों को पूरा करने की गुहार लगाते रहे हैं, लेकिन अब तक किसी भी मांग पर अमल नहीं हुआ है। उनकी मुख्य मांगों में बकाया वेतन तुरंत जारी करने, सातवें वेतन आयोग का लाभ देने, वेतन वृद्धि, सेवा शर्तों में सुधार करना शामिल है। ज्ञापन लेने उपरांत राज्यसभा सांसद ने एनएचएम कर्मचारियों को आश्वासन दिया कि उनकी जायज मांगों की सिफारिश करते हुए शीघ्र समाधान कराने का प्रयास करेंगे।

दूसरे नंबर पर रही गर्ल्स कॉलेज की टीम

बहादुरगढ़। राजकीय महिला महाविद्यालय बहादुरगढ़ की बीएससी द्वितीय वर्ष की छात्रा कोमल, हर्षिता व सिमरन ने जिला स्तरीय विज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त कर कॉलेज का मान बढ़ाया। प्रतियोगिता में जिले के विभिन्न महाविद्यालयों की टीमों ने भाग लिया। प्रतिभागी टीम के साथ गणित विभाग के सहायक प्रोफेसर रविन्द्र कुमार बतौर टीम इंचार्ज सम्मिलित हुए। प्राचार्या अलका गुलाटी ने कहा कि यह उपलब्धि छात्राओं की मेहनत, लगन एवं उत्कृष्ट शैक्षणिक तैयारी का परिणाम है। ऐसी प्रतियोगिताएं विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तार्किक सोच और आत्मविश्वास को प्रोत्साहित करती हैं।

बहादुरगढ़। आयोजकों के साथ कोमल, हर्षिता व सिमरन। फोटो :हरिभूमि

बहादुरगढ़। राधा–कृष्ण के वेश में नन्हे–मुन्ने बच्चे। फोटो :हरिभूमि

विद्यार्थियों की प्रस्तुतियों ने किया मंत्रमुग्ध

बहादुरगढ़। अशोका इंटरनेशनल स्कूल में स्वतंत्रता दिवस और जन्माष्टमी के अवसर पर रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम धूमधाम से आयोजित हुआ। मुख्य अतिथि पूर्व नेवी जेसीओ सुरेंद्र सिंह दहिया और प्रिंसिपल जैनेंद्र कुमार ने ध्वजारोहण कर राष्ट्रध्वज को सलामी दी। विद्यार्थियों ने देशभक्ति गीत, नृत्य, कविताओं और श्रीकृष्ण झांकियों व रास-लीला की प्रस्तुतियों से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। मुख्य अतिथि सुरेंद्र सिंह, स्कूल प्रमुख अशोक शर्मा, निदेशिका विजय लक्ष्मी ने विद्यार्थियों को देशभक्ति, अनुशासन और नैतिक मूल्यों का महत्व बताया।

नशा मुक्त रहने की प्रतिज्ञा करवाई

बहादुरगढ़। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की सेक्टर-13 में स्वतंत्रता दिवस धूमधाम से मनाया गया। इसमें बीके अंजलि दीदी ने स्वतंत्रता सेनानियों के जीवन चरित्र का वर्णन किया। बीके रेणु दीदी ने नशा मुक्त रहने की प्रतिज्ञा करवाई। सेक्टर-9 सेवा केंद्र में बीके प्रीति बहन ने स्वतंत्रता का महत्व समझाया। विशाल ने युवाओं को राजयोग करवाया। बीके दीपा ने सच्ची आजादी कविता गाई। बच्चों ने देशभक्ति नृत्य और कविताओं से प्रभावित किया। बीके सुरेंद्र, बीके रोहतास, बीके संदीप, बीके दिनेश, बीके ममता, निधि व दीपा बहन आदि मौजूद रहे।

बहादुरगढ़। कार्यक्रम में योग करके दिखाती युवती। फोटो :हरिभूमि

बहादुरगढ़। विधायक राजेश जून को स्मृति चिह्न भेंट करते आयोजक। फोटो :हरिभूमि

जसौरखेड़ी मे बैंक कॉलोनी में हुआ भंडारा

बहादुरगढ़। गांव जसौर खेड़ी में जय दादा खीमा वाले के विशाल भंडारे का आयोजन श्रद्धा और उत्साह के साथ किया गया। इसमें विधायक राजेश जून ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की। भंडारे में प्रसाद ग्रहण किया और बुजुर्ग श्रद्धालुओं से आशीर्वाद लिया। साथ ही भंडारे के लिए 11 हजार रुपये की सहयोग राशि भी भेंट की। इसके उपरांत विधायक राजेश जून ने शहर की बैंक कॉलोनी स्थित काली माता मंदिर पर हुए भंडारे में शिरकत करते हुए प्रसाद ग्रहण किया और 5100 रुपये की धनराशि दान स्वरूप मंदिर कमेटी को भेंट की।

बाल विकास को मिला बेस्ट परफॉर्मेंस अवार्ड

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

बाल विकास सीनियर सेकेंडरी स्कूल के विद्यार्थियों ने स्वतंत्रता दिवस समारोह में शानदार प्रदर्शन किया। समारोह में विद्यार्थियों ने पहलगाम एवं ऑपरेशन सिंदूर पर मनमोहक प्रस्तुति दी। विद्यार्थियों की जोशीली और देशभक्ति से ओतप्रोत प्रस्तुतियों के बल पर स्कूल को बेस्ट परफॉर्मेंस अवार्ड से सम्मानित किया गया। प्राचार्या डॉ. पूनम चौधरी, डायरेक्टर एडवोकेट प्रवीण छिल्लर व डॉ. सीमा छिल्लर ने विद्यार्थियों की इस उपलब्धि पर खुशी जाहिर की। शिक्षकों और कोच का आभार व्यक्त किया।

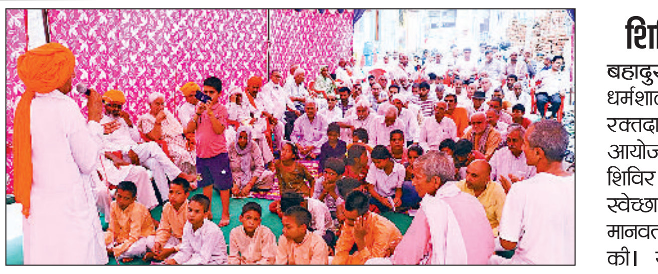

स्वामी शक्तिवेश महाराज की जयंती मनाई

झज्जर। कई गुरुकुलों के संचालक अमर बलिदानी स्वामी शक्तिवेश महाराज की जयंती पर शहर के टिल्ला मौहल्ला स्थित प्राचीन शिव मंदिर में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ के अधिष्ठाता आचार्य विक्रम देव ने की। उन्होंने कहा कि वैदिक सनातन धर्म पूरी तरह वेद आधारित है। हमारे ऋषि-मुनियों व महापुरुषों ने वेद की मान्यताओं से पूरे विश्व को प्रकाशित किया। कार्यक्रम में यज्ञ के ब्रह्मा योगाचार्य मुकेश आर्य ने बताया कि यज्ञ की अग्नि हमें जीवन में ऊपर उठने की प्रेरणा देती है। यज्ञ अग्नि ताप, गति और प्रकाश की प्रतीक है। कार्यक्रम में मुख्यातिथि के रूप में पूर्व प्राचार्य होशियार सिंह व विशिष्टातिथि के रूप में माडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, पलवल के प्राचार्य बालेश्वर अपने-अपने संबोधन में सनातन धर्म को हर कसौटी पर खरा उतरने वाला बताया। इस मौके पर ब्रह्मचारी इंद्रजीत आर्य, पूर्व विधायक अजीत सिंह, डॉक्टर सम्मत सिंह, प्रवीण शर्मा, बसंत, धर्मवीर फौजी, संदीप दीक्षित, दलपत यादव, महाशय रतीराम सहित अन्य भी उपस्थित रहे।

शिविर में 65 लोगों ने किया रक्तदान

बहादुरगढ़। कैंप में रक्तदाता को प्रोत्साहित करते विक्की शर्मा व अन्य। फोटो :हरिभूमि

बहादुरगढ़। देवकरण धर्मशाला में स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में 65 लोगों ने स्वेच्छा से रक्तदान कर मानवता की मिसाल पेश की। रक्त का संचय ब्रह्मशक्ति संजीवनी हॉस्पिटल की ब्लड बैंक टीम द्वारा किया गया। शिविर का शुभारंभ करते हुए समाजसेवी मनोज शर्मा ने रक्तदाताओं का हौसला बढ़ाया। अस्पताल के मैनेजर विक्की शर्मा ने रक्तदान की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि रक्तदान से बढ़कर कोई सेवा नहीं है। उन्होंने आकाश पंवार के साथ रक्तदाताओं को प्रमाण पत्र व बैज लगाकर सम्मानित किया। इस अवसर पर तरूण शर्मा, मंजीत जांगड़ा, सचिन छिल्लर, सुनील दत्त, रमन, हिमांशू जांगड़ा, विजय, विनोद कुमार व विजय जांगड़ा आदि मौजूद रहे।

कॉलेज सुधार के लिए 51 सदस्यीय कार्यकारिणी और 11 सदस्यीय एकेडमी समिति बनाने का लिया निर्णय

झज्जर। पंचायत के दौरान अपनी बात रखते हुए प्रबुद्धजन। फोटो :हरिभूमि

झज्जर। शनिवार को दूबलधन गांव में श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व पर रिटायर्ड एसडीओ नसीब सिंह की अध्यक्षता में कॉलेज पुनरूत्थान के लिए पंचायत का आयोजन किया गया। जिसमें रणवीर सिंह कादियान, एसएन शर्मा, सुखचंद कादियान, रामफल, यादराम शर्मा, प्रोफेसर कुलताज सिंह, प्रोफेसर समंदर सिंह, श्रीभगवान, शिवनारायण शास्त्री, सरपंच नरेंद्र, मास्टर जय भगवान, छत्र सिंह आदि ने अपने विचार प्रस्तुत किए। आखिर में यह निर्णय लिया गया कि कॉलेज के सुधार व पुनरुत्थान के लिए हम अपने पूर्वजों की तरह तन मन धन से सहयोग और सेवा कार्य करेंगे। पंचायत ने कॉलेज के सुधार के लिए 51 सदस्यीय कार्यकारिणी तथा 11 सदस्य एकेडमी समिति बनाने का निर्णय लिया जो इस कॉलेज के उत्थान के लिए हर तरह के कार्य करेंगी। इस कॉलेज के संस्थापक स्तंभों को भी वक्ताओं द्वारा श्रद्धा सुमन अर्पित किए गए। रिटायर्ड एसडीओ नसीब सिंह कादियान ने कहा कि राजकीय दूबलधन कॉलेज ने शिक्षा और खेल की अंतरराष्ट्रीय विभूतियों को तैयार करने में योगदान दिया है। यदि यह कॉलेज दोबारा अपने परम वैभव पर पंहुचता है, तो इस क्षेत्र की तरक्की को कोई नहीं रोक सकता। इस क्षेत्र की तरक्की का रास्ता दूबलधन कॉलेज से होकर गुजरता है। मंच संचालन प्रोफेसर अजय कादियान ने किया।

बहादुरगढ़। मुरली मनोहर मंदिर में पूजा करती चेयरपर्सन सरोज राठी व अन्य।

न्याय के मार्ग पर चलने का किया आह्वान

बहादुरगढ़। प्राचीन मुरली मनोहर मंदिर समेत शहर के अनेक मंदिरों में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व बड़े ही हर्षोल्लास और धार्मिक उत्साह के साथ मनाया गया। चेयरपर्सन सरोज राठी ने इनमें बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की और श्रद्धालुओं को जन्माष्टमी की शुभकामनाएं दीं। चेयरपर्सन सरोज राठी ने कहा कि श्रीकृष्ण का जीवन हमें धर्म, सत्य और न्याय के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। इस मौके पर रमेश राठी, पवन रोहिल्ला, मनमोहित गुप्ता, पंडित नकुल, पंडित योगेश शास्त्री, पंडित कृष्णा, पंडित शिवनारायण, भुवनेश सिंहल, बालकिशन गुप्ता, नरेश राठी, नरेश मुदगिल, प्रवीण भारद्वाज, पंडित खेमचंद भारद्वाज, गगन तिवारी, अनिल, विवेक तिवारी, राजपाल और कपिल गुप्ता आदि मौजूद रहे।

बहादुरगढ़। जटवाड़ा मोहल्ला में शोक जताते पूर्व सीएम भूपेंद्र हुड्डा। फोटो :हरिभूमि

पूर्व सीएम ने जटवाड़ा व परनाला में जताया शोक

बहादुरगढ़। पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा व पूर्व विधायक राजेंद्र सिंह जून ने शनिवार को बहादुरगढ़ के जटवाड़ा मौहल्ला में पहुंचकर सत्यवान राठी के निधन पर शोक जताया। इसके अलावा परनाला में पूर्व सरपंच के पति रामकंवार राठी के निधन पर शोक जताया। बता दें कि सतपाल राठी के बड़े भाई व पार्षद डा. नीना राठी के ज्येष्ठ सत्यवान राठी का 6 अगस्त को हृदयघात से निधन हो गया था। पूर्व सीएम भूपेंद्र हुड्डा ने स्व. सत्यवान राठी की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए श्रद्धांजलि दी। शोक संतप्त परिवार से मिलकर उन्हें ढांढस बंधाया। जबकि परनाला की पूर्व सरपंच उर्मिला देवी के पति रामकंवार काला का 8 अगस्त को निधन हो गया था। इस मौके पर जसवंत राठी, नरेश राठी, रवि खत्री, वजीर राठी, राजपाल आर्य, समुंद्र सहवाग, सतीश घई, जितेंद्र राठी, श्रीओम अहलावत व असलम खान आदि मौजूद रहे।

अभिभावकों ने शिक्षकों से ली अपने बच्चों की शैक्षणिक रिपोर्ट

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

झज्जर। बैठक में शिक्षकों से अपने बच्चों की शैक्षणिक प्रगति को लेकर चर्चा करते हुए अभिभावक। फोटो :हरिभूमि

एमआर स्कूल हसनपुर में अभिभावक-शिक्षक बैठक व विज्ञान एवं कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति, अनुशासन, व्यवहार तथा समग्र विकास को लेकर अभिभावकों व शिक्षकों के मध्य संवाद स्थापित करने के उद्देश्य सेसुबह आठ बजे शुरू हुई बैठक में बड़ी संख्या में अभिभावकों ने भाग लिया। विद्यालय के निदेशक सोमबीर कोडान ने विद्यार्थियों को उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए बधाई देते हुए कहा कि हर बच्चा अलग होता है और हर किसी की सफलता की यात्रा अलग होती है। लगातार प्रयास ही सफलता की कुंजी है। विद्यालय में आयोजित विज्ञान एवं कला प्रदर्शनी में विद्यार्थियों ने विभिन्न विषयों पर तैयार किए गए प्रोजेक्ट्स के माध्यम से अपनी रचनात्मकता और वैज्ञानिक सोच का प्रदर्शन किया। प्राचार्या नेहा शर्मा ने कहा कि अभिभावक-शिक्षक बैठक विद्यार्थियों के विकास में एक सेतु की भूमिका निभाती है। बैठक के समापन पर अभिभावकों ने विद्यालय की व्यवस्थाओं व शिक्षकों के प्रयासों की सराहना करते हुए ऐसे संवादात्मक आयोजनों को नियमित रूप से आयोजित करने की आवश्यकता पर बल दिया।

खबर संक्षेप

छोटूराम धर्मशाला में हुआ ध्वजारोहण

बहादुरगढ़। लाइनपार स्थित दीनबंधु सर छोटूराम धर्मशाला में स्वतंत्रता दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। चेयरमैन उमेद सिंह खत्री ने ध्वजारोहण किया। मौके पर प्रधान सतीश राठी, उपप्रधान मनीष अहलावत, संयोजक जगबीर सुहाग, सचिव रविंद्र देशवाल, सह सचिव अजय कादियान, खजांची तेजिंद्र खत्री, महेंद्र कादियान, रणवीर राणा, देवेन्द्र पूनिया, पार्षद रजनीश मोनू, पूर्व पार्षद संदीप, पवन, राजू, आशीष जांगड़ा, लीला छिल्लर, ढिल्लू नंबरदार, रवि रोहिल्ला, संजय भारद्वाज व प्रिंस मौजूद रहे।

बहादुरगढ़ की नई बस्ती में भी गूंजी देशभक्ति

बहादुरगढ़। नई बस्ती स्थित ओम शांति भवन पर स्वतंत्रता दिवस धूमधाम और उत्साह के साथ मनाया गया। बीके अमृता दीदी ने बताया सच्ची स्वतंत्रता केवल बाहरी नहीं, बल्कि आंतरिक भी होनी चाहिए। हमें अपने भीतर के विकारों पर विजय पाकर आत्मा की पवित्रता को पुनः स्थापित करना होगा। जब मन और बुद्धि विकारों से मुक्त होते हैं, तभी हम वास्तविक सुख, शांति और आनंद का अनुभव कर सकते हैं। अंत में सभी को सच्ची स्वतंत्रता का संकल्प दिलाया गया और प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

छोटूराम नगर में फहराया तिरंगा

बहादुरगढ़। स्वतंत्रता दिवस पर छोटूराम नगर स्थित अमन पब्लिक स्कूल में कार्यक्रम हुआ। इसमें भाजपा सुशासन विभाग के जिला अध्यक्ष रामकंवार सैनी ने झंडा फहराया। भाजपा मंडल अध्यक्ष संजय सैनी ने आजादी के अग्रदूतों को याद किया। शहीद सैनिकों व स्वतंत्रता सेनानियों को नमन किया। मौके पर आशु सैनी, रमेश आर्य, धर्मेंद्र सैनी, संजीत राठी व अरुण अहलावत आदि उपस्थित रहे।

दा झज्जर केंद्रीय सहकारी बैंक लिमिटेड के मुख्यालय पर स्वतंत्रता दिवस समारोह धूमधाम से मनाया गया

स्वतंत्रता दिवस हमारी आजादी के संघर्ष बलिदान व एकता का प्रतीक : देशवाल

कार्यक्रम में देशभक्ति गीतों और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम की स्मृति को जीवंत किया गया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

स्थानीय लघुसचिवालय परिसर स्थित दा झज्जर केंद्रीय सहकारी बैंक लिमिटेड के मुख्यालय पर स्वतंत्रता दिवस समारोह धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता स्थापना अधिकारी संदीप राज्याण ने की, जबकि मुख्यातिथि के तौर पर बैंक के वाइस चेयरमैन राजबीर देशवाल ने शिरकत की। उन्होंने राष्ट्रीय ध्वज फहराकर कार्यक्रम का शुभारंभ किया और उपस्थित जनों को देशभक्ति एवं कर्तव्य परायणता का संकल्प दिलाया। कार्यक्रम में देशभक्ति गीतों, प्रेरणादायक भाषणों और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम की स्मृति को जीवंत किया गया। मीडिया प्रभारी पंडित लोकेश शर्मा ने बताया कि कार्यक्रम के माध्यम से सभी कर्मचारियों और नागरिकों को राष्ट्र निर्माण की दिशा में प्रेरित किया गया। इस दौरान शाखा प्रबंधक नीरज धनखड़, मांगेराम बुल्याण, ईश्वर सिंह, अमित गुलिया, अनूप गहलावत, सुंदर सिंह, कृष्ण गुलिया, विजय कुमार, सचिन धनखड़ सहित स्टॉफ के अन्य सदस्य भी मौजूद रहे।

झज्जर। ध्वजारोहण के उपरांत उपस्थित वाइस चेयरमैन राजबीर देशवाल एवं स्टॉफ कर्मी।

झज्जर। ध्वजारोहण के समय मंच पर उपस्थित मुख्यातिथि, भूतपूर्व सैनिक व शिक्षक।

दहकोरा में रिटायर्ड कैप्टन ने किया ध्वजारोहण

बहादुरगढ़। मुख्य अतिथि कैप्टन मंगलीराम को नेताजी की तस्वीर भेंट करते प्रिंसिपल।

बहादुरगढ़। गांव दहकोरा के सरकारी हाई स्कूल में स्वतंत्रता दिवस बड़े उत्साह और देशभक्ति की भावना के साथ मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कैप्टन मंगली राम रहे। कार्यक्रम की शुरुआत ध्वजारोहण और राष्ट्रगान से हुई। इसके बाद प्राथमिक व उच्च विद्यालय के विद्यार्थियों ने लोक नृत्य, देशभक्ति कविताएं और विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से सभी का मन मोह लिया। मुख्य अतिथि मंगली राम ने विद्यार्थियों को विद्यालय परिसर को स्वच्छ रखने, मेहनत करने और अनुशासन का पालन करने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर सरपंच कविता, प्रिंसिपल सुभाष हुड्डा, कुलदीप, रोशनी, अंजू बाला, रजनी, प्रिया और पंकज आदि शिक्षक उपस्थित रहे।

अंबेडकर स्कूल में ध्वजारोहण

बहादुरगढ़। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर डॉ. अंबेडकर स्कूल में धूमधाम से कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस मौके पर डॉ. अंबेडकर सभा बहादुरगढ़ के प्रशासक सोरण सिंह मुख्य अतिथि रहे। उन्होंने ध्वजारोहण किया और स्वतंत्रता सेनानियों को नमन किया। विद्यालय के बच्चों ने देशभक्ति नृत्य, गीत और नाटक प्रस्तुत कर सभी का मन मोह लिया।

स्वतंत्रता सेनानियों का बलिदान कभी भुलाया नहीं जा सकता : ऊषा देवी

झज्जर। राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कबलाना में स्वतंत्रता दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में करीब 96 वर्षीय भूतपूर्व सैनिक देवी सिंह पहलवान ने ग्राम सरपंच ऊषा देवी व सरपंच प्रतिनिधि हंसबीर कोडान के साथ मिलकर ध्वजारोहण किया। सरपंच ऊषा देवी ने बताया कि आजादी के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। उन्होंने देश रक्षा के लिए अपनी जान की बाजी लगाने वाले सैनिकों को भी सलाम किया। इस मौके पर दीवान सिंह, कैप्टन राजेंद्र, मास्टर दरियाव सिंह, पूर्व नौ सैनिक प्रदीप, महेंद्र पहलवान, वेदप्रकाश, हजारी लाल, जोगेंद्र पंडित, पहलवान कप्तान सहित अन्य मौजूद रहे।

वैश्य बीएड कॉलेज में किया ध्वजारोहण

बहादुरगढ़। वैश्य आर्य शिक्षण महिला महाविद्यालय में कॉलेज प्रधान सत्यनारायण अग्रवाल, महासचिव सुरेश अग्रवाल, मैनेजर पवन गोयल, कोषाध्यक्ष मनोज गुप्ता, संदीप अग्रवाल तथा प्राचार्या डॉ. आशा शर्मा ने ध्वजारोहण किया। देशभक्ति गीतों से पूरा प्रांगण गूंज उठा। कार्यक्रम में सुनीता, सारिका, मोनिका व आरती आदि मौजूद रहे।

सराय में दौड़कर मनाया आजादी का जश्न

बहादुरगढ़। दौड़ का शुभारंभ करवाते कोच करण राठी।

बहादुरगढ़। गांव सराय औरंगाबाद में स्थित डॉ. ललित भनोट अकेडमी में दौड़ का आयोजन करके स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। कोच करण राठी ने बताया कि जूनियर वर्ग में आदित्य ने स्वर्ण, कबीर ने रजत और डेनिश ने कांस्य पदक जीता। सीनियर वर्ग में नवदीप ने स्वर्ण, कुलजीत ने रजत और आदित्य ने कांस्य पदक जीते। लड़कियों में महक ने स्वर्ण, निर्मला ने रजत और परी ने कांस्य पदक जीता। इस दौरान मास्टर करमजीत अहलावत, बिजेंद्र ढांडा और केशर गौतम मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

दिनेश कौशिक ने कई जगह किया ध्वजारोहण

बहादुरगढ़। भाजपा के विधानसभा संयोजक दिनेश कौशिक ने अनाज मंडी सहित विभिन्न कार्यक्रमों में पहुंचकर ध्वजारोहण किया। अनाज मंडी में उनके साथ चेयरपर्सन सरोज राठी, पार्षद भीम सिंह प्रणामी, राजबाला, अमित कौशिक, प्रधान प्रदीप बबलू गुप्ता, मंडल अध्यक्ष पंकज गर्ग, सुदेश रंगा और पार्षद राजेश तंवर भी मौजूद रहे। उन्होंने सेक्टर-2 स्थित पार्क में भी ध्वजारोहण किया। गांव लोवा खुर्द के सरकारी स्कूल में भी ध्वजारोहण किया। बच्चों को देशभक्ति एवं राष्ट्र सेवा के लिए प्रेरित किया।

बहादुरगढ़। परिजनों के साथ अपने घर पर तिरंगा लगाते डॉ. पंकज जैन।

भाजपा ने चलाया हर घर तिरंगा अभियान

बहादुरगढ़। हर घर तिरंगा अभियान के तहत वरिष्ठ भाजपा नेता डॉ. पंकज जैन ने स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर अपने आवास पर परिजनों के साथ तिरंगा फहराया और राष्ट्रीय ध्वज को सलामी दी। उन्होंने कहा कि तिरंगा झंडा हर देशवासी के लिए आन, बान और शान का प्रतीक है। डॉ. पंकज जैन ने देश की आजादी के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले सभी ज्ञात-अज्ञात शहीदों को नमन किया। उन्होंने कहा कि राष्ट्र हमेशा अपने वीर बलिदानियों का ऋणी रहेगा और हमें उनके सपनों का भारत बनाने के लिए निरंतर प्रयास करना चाहिए।

गर्ल्स कॉलेज में किया ध्वजारोहण

बहादुरगढ़। राजकीयम महिला महाविद्यालय में 79वां स्वतंत्रता दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ ध्वजारोहण एवं राष्ट्रगान से हुआ। विद्यार्थियों ने आजादी के अमर सेनानियों को श्रद्धांजलि दी। प्राचार्या अलका गुलाटी ने कहा कि स्वतंत्रता केवल अधिकार नहीं, बल्कि जिम्मेदारी भी है। हमें मिलकर देश की प्रगति, एकता और सामाजिक समरसता के लिए कार्य करना चाहिए।

कानोंदा स्कूल में मनाया स्वतंत्रता दिवस

बहादुरगढ़। राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कानोंदा में 79वां स्वतंत्रता दिवस धूमधाम से मनाया गया। सेवानिवृत्त सैनिक कर्मचारी संगठन के अध्यक्ष श्री रामनिवास छिकारा द्वारा ध्वजारोहण किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य सरोज देवी ने की। मोनिका देवी की देखरेख में हुए कार्यक्रम में मंच संचालन सुरेश वर्मा ने किया। विद्यार्थियों ने झांकियां प्रस्तुत कीं एसएमसी सदस्य जगबीर मेहरा व बिजेंद्र नंबरदार ने बच्चों को प्रोत्साहित किया। मौके पर गांव के भूतपूर्व सैनिक नफे सिंह, श्रीओम व बलजीत आदि मौजूद रहे।

नरेश जून ने किया ध्वजारोहण

बहादुरगढ़। वरिष्ठ कांग्रेस नेता नरेश जून ने अपने संस्थान पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया। सभी ने देशभक्ति के नारे लगाए। नरेश जून ने कहा कि युवा देश की एकता, अखंडता और विकास में अपनी सक्रिय भूमिका निभाएं। हमें स्वतंत्रता सेनानियों के आदर्शों को अपनाने की आवश्यकता है।

स्कॉलर्स में मनाया स्वतंत्रता दिवस समारोह

बहादुरगढ़। स्कॉलर्स ग्लोबल विद्यालय में स्वतंत्रता दिवस बड़े हर्षोल्लास और देशभक्ति के जोश के साथ मनाया गया। छात्रों ने स्किट /"भारत नवाचार– नया आत्मनिर्भर भारत/" से प्रभावित किया। स्किट में /"ऑपरेशन सिंदूर/" की झलक भी दर्शाई गई। देशभक्ति गीतों ने सभी के हृदय में राष्ट्रप्रेम की लौ प्रज्वलित की। प्रिंसिपल ने स्वतंत्रता का वास्तविक अर्थ स्पष्ट किया।

जूपिटर में मनाया स्वतंत्रता दिवस

हरिभूमि न्यूज. बहादुरगढ़

रोहद स्थित जूपीटर पब्लिक स्कूल में स्वतंत्रता दिवस कार्यक्रम में स्कूल निदेशक राजकुमार रुहिल ने ध्वजारोहण किया। चारों हाउसों ने अपनी अपनी वेशभूषा में परेड का शानदार प्रदर्शन किया। प्राचार्य राजपाल सिंह सनवाल और राजकुमार रुहिल को विद्यार्थियों ने सलामी दी। उन्होंने बताया कि राष्ट्र की उन्नति में सहयोग देना ही शहीदों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

बहादुरगढ़। स्वयं द्वारा बनाए गए तिरंगे दिखाते विद्यार्थी।

नागरिक अस्पताल परिसर में मरीजों को फल बांटे

झज्जर। स्वतंत्रता दिवस पर जिला रेडक्रास सोसायटी की चेयरपर्सन मोहिनी स्वप्निल पाटिल ने नागरिक अस्पताल में विभिन्न वार्डों में भर्ती मरीजों से उनका हालचाल जाना और उनके शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना की। मरीजों ने बताया कि डॉक्टरों व अस्पताल की टीम द्वारा उन्हें सही ढंग से उपचार उपलब्ध कराया जा रहा है।

इस दौरान मोहिनी स्वप्निल पाटिल ने मरीजों को फल वितरित किए और अस्पताल स्टॉफ को उनके प्रयासों के लिए प्रोत्साहित किया। इस अवसर पर सिविल सर्जन डॉक्टर जयमाला, जिला रेडक्रास सोसायटी सचिव देवेंद्र चहल सहित स्टॉफ के अन्य भी मौजूद रहे।

सार्थक समिति ने मनाया स्वतंत्रता दिवस

बहादुरगढ़। सेक्टर-9 में स्वतंत्रता दिवस मनाते समिति सदस्य।

बहादुरगढ़। सार्थक सेवा समिति ने सेक्टर-9ए के कम्युनिटी सेंटर में स्वतंत्रता दिवस मनाया। ध्वजारोहण के उपरांत बच्चों ने सार्थक पब्लिक लाइब्रेरी में रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए। समिति अध्यक्ष एनएस कपूर ने कविता सुनाकर स्वतंत्रता के संघर्ष के बारे में बताया। करीब 90 वर्षीय महाबीर प्रसाद मुद्गल और बीके प्रीति दीदी का सम्मान किया गया। सुदेश संदूजा ने भी कविता सुनाई। इस दौरान 80 वर्षीय एसएम पाल, 77 वर्षीय ज्ञान सिंह सैनी व 77 वर्षीय एचसी रोझा को भी सम्मानित किया गया।

बच्चों को शहीद कैप्टन कुलदीप सिंह के बारे में बताया

बहादुरगढ़। शहीद कैप्टन कुलदीप राठी के स्मारक पर ध्वज लहराते ग्रामीण।

बहादुरगढ़। गांव सांखोल में स्वतंत्रता दिवस धूमधाम से मनाया गया। यहां सबसे पहले शहीद कैप्टन कुलदीप सिंह राठी स्मारक पर पूर्व फौजियों और सरपंच प्रतिनिधि राज मास्टर के द्वारा ध्वजारोहण किया गया। ग्रामवासियों द्वारा शहीद कैप्टन कुलदीप सिंह की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित किए। स्कूली बच्चों को कैप्टन कुलदीप राठी के बलिदान के बारे में बताया गया। इसके बाद गांव के प्राइमरी स्कूल में ध्वजारोहण किया गया। संघर्षशील जनकल्याण सेवा समिति सदस्य निशांत राठी ने गांव के सरकारी स्कूल के लिए एक इनवर्टर सेट भेंट करने का वादा किया। गांव की रिटायर्ड शिक्षिकाओं सरोजनी, रोशनी और सावित्री देवी के द्वारा 3100 रुपये स्कूल में कार्यों के लिए दिए गए।

एमई जोगेंद्र सिंधु को किया सम्मानित

एमई जोगेंद्र सिंधु को सम्मानित करते विधायक राजेश जून व अन्य।

बहादुरगढ़। डॉ. भीमराव अंबेडकर स्टेडियम में हुए उपमंडल स्तरीय स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन बड़े हर्ष उल्लास एवं देशभक्ति के वातावरण में किया गया। इसमें नगर परिषद के एमई जोगेंद्र सिंधु को उल्लेखनीय उपलब्धि के लिए विधायक राजेश जून ने सम्मानित किया। विधायक राजेश जून, एसडीएम नसीब कुमार व एसीपी प्रदीप खत्री ने कहा कि हर अधिकारी व कर्मचारी को अपने कर्तव्यों एवं दायित्वों का निष्ठापूर्वक निर्वाहन करना चाहिए।

सांसद ने किया शहीद की प्रतिमा का अनावरण

झज्जर। गांव साल्हावास में सांसद दीपेंद्र सिंह हुड्डा ने जांबाज अग्निवीर सैनिक शहीद नवीन जाखड़ की प्रतिमा का अनावरण करते हुए उन्हें नमन किया। उन्होंने कहा कि हरियाणा के युवाओं के लिए फौज में भर्ती होना गर्व की बात होती है। सेना में देश की दो प्रतिशत आबादी वाले हरियाणा से दस प्रतिशत सैनिक देश सेवा में जाते हैं। लेकिन बीजेपी सरकार देश की फौज को खोखला करने वाली अग्निपथ जैसी योजना लाकर शहीद-शहीद में फर्क कर रही है। उन्होंने कहा कि अग्निवीर सैनिक को भी नियमित सैनिक की तरह सारी सुविधाएं मिलनी चाहिए। उन्होंने कहा कि अब तक जितने अग्निवीर भर्ती हुए हैं सरकार उन सभी को नियमित सैनिक का दर्जा दें। उन्होंने कहा कि हम देश भर में अग्निपथ योजना को समाप्त करने की लड़ाई लड़ेंगे।

वैश्य कॉलेज में मना स्वतंत्रता दिवस

बहादुरगढ़। मनोज सिंहल को स्मृति चिह्न देते कॉलेज पदाधिकारी।

बहादुरगढ़। वैश्य आर्य कन्या महाविद्यालय में 79वां स्वतंत्रता दिवस धूमधाम के साथ मनाया गया। मुख्य अतिथि के रूप में बीसीसीआई के सचिव मनोज सिंघल ने ध्वजारोहरण कर सभी को स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं दी। कॉलेज छात्राओं ने देशभक्ति के भाव से पूर्ण कार्यक्रमों की प्रस्तुति की गई। मंच संचालन अंजू चौधरी ने किया व प्रीति संयोजिका रहीं। बहादुरगढ़ शिक्षा सभा के प्रधान श्रीनिवास गुप्ता ने कहा कि स्वतंत्रता सेनानियों के असंख्य बलिदानों से भारत ने विश्व में अपनी पहचान बनाई है। प्राचार्या डॉ राजवंती शर्मा ने कहा कि संघर्षों के बाद मिली आजादी की हम गरिमा बनाए रखें। उप प्रधान पवन जैन ने कहा कि हम बेहतर देश बनाने का संकल्प लें। राजपाल शर्मा ने कहा कि हमें अपने मन-वचन व कर्म से देश सेवा के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए। मौके पर मनीष जिंदल, आशीष कुमार, यशपाल गांधी, अजय गुप्ता, एमसी जोशी, अजय कुमार, विकास व विवेक तायल आदि उपस्थित रहे।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
बहादुरगढ़ : सूरजमल वाली गली, गणपति ट्रैवलर्स के ऊपर, नजदीक टैक्सी स्टैंड, बहादुरगढ़
झज्जर :- पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, झज्जर
फोन : 8295738500, 8814999142, 8295157800, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।

हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5×8 सें.मी 10× 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2500/- रु. 3000/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
झज्जर : हरिभूमि कार्यालय, पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, फोन : 8295876400
बहादुरगढ़ : सुरजमल वाली गली, रोहतक रोड, गणपति ट्रैवल्स के ऊपर, 8295852900

विद्यार्थियों ने देशभक्ति गीतों पर नृत्य कर बांधा समां

झज्जर। सनराइज हाई स्कूल में स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम की शुरुआत ध्वजारोहण से हुई। विद्यालय निदेशक रवि यादव ने मुख्याध्यापिका रूबी यादव, सरदार रोशन सिंह व पूनम अहलावत के साथ ध्वजारोहण करते हुए तिरंगे को नमन किया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने देशभक्ति गीतों पर नृत्य कर समां बांधा। नर्सरी व एलकेजी कक्षा के विद्यार्थियों ने नन्हा मुन्ना राही हूं गीत पर मनमोहक प्रस्तुति दी। पहली व दूसरी कक्षा के विद्यार्थियों ने छोटा बच्चा जानके हमको ना समझाना रे व दूसरी की छात्रा सनवी ने देश भक्ति गीत पर अपनी शानदार प्रस्तुति दी। सातवीं व आठवीं के विद्यार्थियों ने शहीद भगत सिंह के जीवन पर एक नाटक प्रस्तुत किया। विद्यालय निदेशक रवि यादव ने कार्यक्रम के प्रतिभागी विद्यार्थियों को प्रशस्ति पत्र देकर पुरस्कृत किया।

नाटक के माध्यम से बताया स्वतंत्रता दिवस का महत्व

झज्जर। सारथी पब्लिक स्कूल खेड़ी खुम्मार में स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में देशभक्ति पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में औजस कायत, गरिमा, गर्वित, अंश व दीया ने देशभक्ति पर आधारित सांस्कृतिक प्रस्तुति दी वहीं प्राची कायत ने वेलकम स्पीच देकर सभी का मन मोहा। सभी प्रतिभागी विद्यार्थियों को स्कूल प्रबंधन की ओर से पुरस्कृत किया गया।

देश की एकता, अखंडता और समृद्धि के लिए निरंतर कार्य करने का लिया संकल्प

झज्जर। राजकीय स्नातकोत्तर नेहरू महाविद्यालय में स्वतंत्रता दिवस समारोह उत्साह और देशभक्ति से परिपूर्ण वातावरण में मनाया गया। महाविद्यालय के प्रभारी प्राचार्य डॉक्टर सुरेंद्र कुमार पूनिया ने ध्वजारोहण कर तिरंगे को सलामी दी। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम के महान बलिदानियों को नमन करते हुए कहा कि आजादी हमें अपार त्याग और संघर्ष के बाद मिली है। इसलिए हमें इसकी रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए। मौके पर स्टाफ सदस्यों और कर्मचारियों ने तिरंगा शपथ ली, जिसमें देश की एकता, अखंडता और समृद्धि के लिए निरंतर कार्य करने का संकल्प व्यक्त किया गया।

अग्रसेन महिला महाविद्यालय में धूमधाम से मनाया स्वतंत्रता दिवस समारोह

झज्जर। महाराजा अग्रसेन महिला महाविद्यालय में स्वतंत्रता दिवस धूमधाम से मनाया गया। महाविद्यालय की कार्यकारी प्राचार्या डॉक्टर चित्रलेखा व महाराजा एजुकेशन ट्रस्ट के वरिष्ठ पदाधिकारी श्याम सुंदर गोयल ने मुख्यातिथि मानकचंद गुप्ता के साथ कार्यक्रम की शुरूआत की। महाविद्यालय के फाउंडर सदस्य मुख्यातिथि मानक चंदगुप्ता सन 1984 से महाविद्यालय के निर्माण की यादों को उपस्थित जनसमूह के साथ सांझा किया। कार्यक्रम में संस्था सचिव गौरव गोयल, उप प्रधान प्रवीण गोयल, कोषाध्यक्ष तरुण सिंघल, सदस्य संजय गुप्ता, केशव सिंघल, पीयूष जैन, सुनील जैन, सत्यनारायण गोयल, प्रमोद बंसल व संजय गोयल सहित अन्य भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान नेहरू महाविद्यालय मे आयोजित विज्ञान प्रश्नोत्तरी में प्रथम स्थान हासिल करने वाली टीम को भी पुरस्कृत किया गया।

देशभक्ति से ओतप्रोत झांकियों ने मन मोहा

बहादुरगढ़। लडरावण में स्थित श्री स्वामी समर्थ इंटरनेशनल स्कूल स्वतंत्रता दिवस उत्साहपूर्व मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत स्कूल संचालक अभिषेक छिल्लर द्वारा ध्वजारोहण से हुई। विद्यार्थियों ने राष्ट्रगान गाकर तिरंगे को सलामी दी। बाल वाटिका के नन्हे बच्चों ने राधा-कृष्ण की झांकी और नृत्य से सभी का मन मोह लिया। अंत में प्रसाद स्वरूप लड्डू वितरित किए गए।

होनहार विद्यार्थियों को किया सम्मानित

झज्जर। राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सिकंदरपुर में स्वतंत्रता दिवस कार्यक्रम की शुरूआत गांव के भूतपूर्व सैनिकों द्वारा की गई। राजे राम, कैप्टन नारायण सिंह तथा कप्तान राजपाल तथा विशिष्टातिथि जिले सिंह ने ध्वजारोहण कर देश को आजादी दिलाने वाले अमर शहीदों को नमन किया। ऑपरेशन सिंदूर पर आधारित लघु नाटिका की प्रस्तुति ने विद्यार्थियों और ग्रामीणों में देशभक्ति की भावना को जागृत करने का काम किया। विशिष्टातिथि जिले सिंह ने विद्यालय को इस 223 किताबें लाइब्रेरी के लिए भेंट की। प्राचार्य सतवीर ने अतिथियों को स्मृति चिन्ह भेंट किए। इस मौके पर प्राध्यापिका पिंकी जाखड़, कैप्टन नारायण सिंह, सदासुख, सत्ते, हरीश, मास्टर कंवर सिंह, हवा सिंह, रामकिशोर अन्य उपस्थित रहे।

ना करें किसी से तुलना
आप स्वयं हैं अनमोल

कई लोग हमेशा दूसरों से अपनी तुलना करते रहते हैं और खुद को कमतर आंकते हैं। ऐसे लोग न जीवन में बड़ी उपलब्धियां हासिल कर पाते हैं और न ही खुश-संतुष्ट रहते हैं। अगर आप भी ऐसा सोचते हैं तो आपको अपना नजरिया बदलना होगा। ऐसा कैसे कर सकते हैं, जानिए।

कवर स्टोरी
शिखर चंद जैन

कई लोग यह सोचकर हमेशा परेशान और दुखी रहते हैं कि वे दुनिया से पिछड़ गए। ऐसा अकसर वही लोग करते हैं, जिन्हें यह आभास नहीं कि हम ईश्वर की अनमोल कृति हैं। प्रकृति ने हमें अतुलनीय गुण दिए हैं। दुनिया का कोई भी सजीव दूसरे सजीव से हूबहू मेल नहीं खा सकता।

तुलना है निरर्थक

इस बात को समझ लेना जरूरी है कि आप इस ब्रह्मांड में अपने जैसे अकेले ही हैं। इसलिए दूसरों से तुलना करना या उनके जैसा बनने की कोशिश करना व्यर्थ की मशक्कत है। इसमें अपना समय, श्रम, धन और ऊर्जा का अपव्यय करने की बजाय स्वयं को निरंतर निखारने के जतन करें। आम का स्वाद या आकार केले जैसा हो या अमरूद का स्वाद संतरे जैसा हो तो क्या आप इसे कभी सच्चे मन से स्वीकार कर पाएंगे? आप करेले को उसकी कड़वाहट के साथ उसके गुणों के कारण ही तो स्वीकार करते है।

एक तरह का भ्रम है परफेक्शन

परफेक्शन यानी संपूर्णता एक ऐसी भावना है, जो हमें निरंतर परेशान करती है। लेकिन इसे कभी प्राप्त नहीं किया जा सकता, क्योंकि जिस पल आप स्वयं को किसी भी मायने में पूर्ण करते हैं, वह अगले ही पल बदली हुई परिस्थितियों और समय के कारण अपूर्ण या पुरातन हो जाता है। संसार में बुराई, दुख और अपूर्णता अपरिहार्य हैं। दुख ऐसी भावना है, जो हर व्यक्ति के जीवन में किसी न किसी रूप में अनुभव होती ही है। अपूर्णता जीवन की मूलभूत सच्चाई है, जो हमें सिखाती है कि कुछ भी पूर्ण नहीं होता। बुराई और कमियां इस संसार में अंतर्निहित हैं। लेकिन धार्मिकता, पवित्रता और सरलता जैसे गुणों को विकसित करके उच्च अवस्था प्राप्त की जा सकती है। इस प्रक्रिया में अच्छे गुणों को प्राप्त और विकसित करके हम स्वयं को सुखी बना सकते हैं।

जीवन के अंग अच्छा-बुरा

हमारे व्यक्तित्व और जीवन में अच्छाई के साथ-साथ बुराई भी मौजूद होती है। किंतु हमें उन बुराइयों को पहचान कर उन पर विजय प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। जीवन को संवारने के लिए हमें मूर्तिकार की तरह काम करना पड़ता है, जो अपनी मूर्ति बनाने के लिए पत्थर को काटता है, अनुपयोगी या अतिरिक्त पत्थर को छांटकर, छीलकर, रगड़ कर, घिसकर उसे एक सुंदर आकार देता है। हम चाहे जितनी किताबें पढ़ लें और चाहे जितने ज्ञानी हो जाएं, लेकिन यह ज्ञान अगर हमारे जीवन में नहीं उतरता है, उसे प्रभावित, निर्देशित या निर्धारित नहीं करता है तो यह सब बेकार है।

भावनाओं पर नियंत्रण जरूरी

कई बार आप अचानक इधर-उधर की बातें सोचकर, किसी की सफलता, समृद्धि या सुख को देखकर विचलित या दुखी हो जाते होंगे। स्वयं को कोसते हुए एक अनजान अपराधबोध से घिर जाते होंगे। ऐसी स्थिति से बचने के लिए अपनी भावनाओं पर बारीकी से नजर रखिए। आपकी विवेकशीलता ही इस भावनात्मक प्रभाव को रोक सकती है। यह क्षमता आपको स्वयं हासिल करनी होती है। जब आप दुखी करने वाली भावनाओं को पहचानना सीख लेते हैं तो खुश होने के

असर बढ़ने लगते हैं। आप तनाव और गुस्से में हों तो सोचिए कि इसकी मूल वजह क्या है? इसके पीछे कौन-सी चीज, व्यक्ति या स्थिति है? फिर यह विचार कीजिए कि वह क्या चीज है, जो आपको दूसरों से अलग बनाती है? यह ताकत आपको अनावश्यक गुस्से से बचाएगी और कोई वाजिब कारण है तो उसे दूर करने का मौका देगी।

करते रहें आत्मविश्लेषण

इस बात से ज्यादा फर्क नहीं पड़ना चाहिए कि लोग आपके कितने खिलाफ हैं या कितने लोग आपके समर्थन में हैं? आपको अपने आपको दृढ़ रखते हुए सही दिशा में कार्य करना होगा। आपको स्वयं से पूछना होगा कि मैं क्या हासिल करना चाहता हूं और उसके लिए क्या कर रहा हूं? जो कर रहा हूं, उसमें क्या त्रुटियां हैं, जिन्हें दूर करना है? बस फिर आपको सभी बाहरी चिंताओं से छुटकारा मिल जाएगा।

अतीत जैसा है आज का दौर

तुलना चाहे जैसी भी क्यों ना हो, व्यर्थ और निरर्थक ही होती है। चाहे वह व्यक्ति के संबंध में हो या समय और परिस्थिति के संबंध में हो। कुछ लोगों को अकसर यही सोचकर दुखी और परेशान होते देखा जा सकता है कि पुराना जमाना बहुत अच्छा था। उनका मानना रहता है कि उस समय के लोग और परिस्थितियां अच्छी थीं, तब चीजें सस्ती होती थीं, लोग मिलनसार और सहयोगी थे, लूटपाट, चोरी और डकैती नहीं होती थी। यह एक गलतफहमी है कि दुनिया कभी बहुत अच्छी थी। जिस समय के लिए आप यह सब सोचते हैं, उस समय के लोग भी यही सब सोचते थे कि उनसे पहले की दुनिया अच्छी होती थी। आप किसी भी युग का इतिहास या साहित्य पढ़ लीजिए, उस समय के अत्याचारी राजा महाराजा, बादशाह, सेठ साहूकारों के लूट और शोषण के किस्से, गरीबी का आलम और महंगाई की दास्तान पढ़ने को मिल जाएगी। लुटेरे, धोखेबाज, अपराधी, लालची मित्र, कंजूस मालिक और ईर्ष्यालु रिश्तेदार या पड़ोसी हर जमाने में रहे हैं। भगवान राम का जमाना हो या श्री कृष्ण का, हरिश्चंद्र का जमाना हो या मुगल बादशाह अकबर या फिर ब्रिटिश काल, हर युग में खलनायक हुए हैं। हमारा मन ही कुछ ऐसा है, जो हमेशा बीते हुए कल में या दूसरों में परफेक्शन और सुख ढूंढता है। दुनिया में हर समय मुट्ठी भर लोग ही बहुत अच्छे और मुट्ठी भर लोग ही बहुत बुरे हुए हैं। बाकी के लोग तो हमारी और आपकी तरह सामान्य इंसान रहे हैं। इन दुश्चिंताओं, उलझनों और बेचैनी से बचने का सिर्फ एक ही रास्ता है, तुलना न करके अपने मन-जीवन का ध्यान खुद रखना।

सबसे जरूरी रखें धीरज

बचपन से माता-पिता और गुरु हमेशा एक ही बात सिखाते रहे हैं, धैर्य रखना और मन को शांत रखना। याद करिए, बचपन में आप परीक्षा देने जाते थे तो मां या पिताजी यही कहते थे, पेपर ठीक से पढ़ना। कठिन लगे तो घबराना मत। बार-बार प्रश्न पढ़ना। प्रश्न समझ में आए तो उत्तर लिखना। यही मुश्किल परिस्थितियों से निपटने का अचूक फार्मूला है। आपको अपना मन शांत करने के लिए खुद पर निर्भर रहना है ना कि दूसरों पर।

परिवर्तन को स्वीकार करें

आपको अपने जीवन की जिम्मेदारी खुद ही लेनी होगी। जीवन सहज परिवर्तनों की एक श्रंखला है। इन परिवर्तनों को सहज भाव से स्वीकार करें। इनका विरोध करने या इनसे पलायन करने पर सिर्फ दुख ही महसूस होता है। वास्तविकता को स्वाभाविक समझकर अपने जीवन की रणनीति तैयार करें। परिवर्तनों के लिए किसी भी व्यक्ति या किस्मत को दोष न दें। इसके लिए आपको हर रोज कुछ पल अपने साथ बिताने होंगे। एकांत में चिंतन करना होगा। *

नेचर है पावरफुल मेंटल हीलर

यह सच है कि आज की आधुनिक जीवनशैली में लोग तकनीक के जाल में उलझकर, नेचर से दूर होते जा रहे हैं। इसी वजह से लोग मेंटल प्रॉब्लम्स की गिरफ्त में आ रहे हैं। इनसे मुक्ति पाने के लिए हमें नेचर के करीब जाना होगा।

लाइफस्टाइल
बुशरा फातमा

आस-पास फैली हरियाली, नदी, समंदर, झरने न सिर्फ देखने में सुंदर लगते हैं बल्कि ये हमारे मन को हील करने में भी मददगार साबित होते हैं। आज दुनिया जिस सोशल मीडिया के जाल में फंसती जा रही है, उस वजह से हर दूसरा इंसान अकेलेपन से जूझ रहा है। यह कितनी बड़ी विडंबना है कि एक तरफ टेक्नोलॉजी हमें चांद तक पहुंचा रही है, दूसरी तरफ हमारे पास एक अदद कोई अपना नहीं, जिससे हम अपने मन की बात कह सकें। आभासी दुनिया में भले ही ढेरों फ्रेंड्स हों लेकिन वास्तव में कोई ऐसा दोस्त नहीं मिलता, जिसे

हम अपना कह सकें। देश-दुनिया में डिप्रेशन के मामले और इसकी वजह से आत्महत्याएं इतनी ज्यादा बढ़ती जा रही हैं कि हेल्थ एक्सपर्ट्स डिप्रेशन को एक महामारी मानने लगे हैं।

नेचर की ओर करें रुख

हेल्थ और फिटनेस कंसल्टेशन के लिए डब्लूआईबीए अवार्ड विनर प्रमिला ओल्सन मुंबई की सेटल्ड लाइफ छोड़कर नीलगिरि की पहाड़ियों में आशियाना बनाकर रहने लगीं। दरअसल, शोर-शराबा, दौड़-भाग और तकनीक पर अत्यधिक निर्भरता से एक तरह का मानसिक दबाव महसूस होने लगता है, जिसकी वजह से प्रमिला को लगा कि अगर जिंदगी को बेहतर बनाना है तो प्रकृति के करीब रहना बहुत जरूरी है। लेकिन अब हर इंसान इतना बड़ा निर्णय तो नहीं ले सकता कि वो एक सेटल्ड लाइफस्टाइल को बदल ले, इसलिए अगर आपके आस-पास एक पार्क भी है तो दिन का थोड़ा वक्त वहां जरूर बिताइए। प्रामिला बताती हैं कि आजकल के डिजिटलाइजेशन के युग में लोग बहुत अकेले हो गए हैं और उन्हें कोई एक चीज बचा सकती है तो वो है प्रकृति।

मेंटल हेल्थ के लिए जरूरी

आज के दौर में लोगों पर बढ़ता वर्कलोड और बढ़ता तनाव, इस बात का इशारा कर रहा है कि अगर जीवन को बेहतर बनाना है तो प्रकृति के करीब जाना बहुत जरूरी है। खासतौर पर वर्कप्लेस का स्ट्रेस युवाओं को डिप्रेशन की तरफ ले जा रहा है। यही वजह है कि आजकल बहुत से लोग अच्छी-खासी जॉब छोड़ कर किसी पहाड़ी या समंदर के किनारे वाली जगह शिफ्ट हो रहे हैं। वास्तव में नेचर में एक हीलिंग पावर होती है। इसलिए बेहतर मेंटल हेल्थ के लिए नेचर से कनेक्टेड रहना बहुत जरूरी है। नेचर हमें फ्रेश, एनर्जेटिक और मेंटली हेल्दी बनाती है।

मिलता है सुकून-शांति

जीवन की भाग-दौड़ में अगर कोई चीज हम से छिन गई है तो वो है हमारा सुकून। प्रकृति के पास जाकर थोड़ा समय बिताने से हमें खुद को जानने-समझने का मौका मिलता है। वरना मोबाइल, इंटरनेट और सोशल मीडिया के युग में हम खुद के अस्तित्व को भूलते जा रहे हैं। प्रकृति हमारा मन शांत करती है और हम जीवन को नए नजरिए से देख पाते हैं।

गार्डनिंग से मिलती है तनाव से मुक्ति

अगर आपके पास समय का अभाव है तो नेचर के करीब जाने की शुरुआत अपने घर के गार्डन से कीजिए। नए-नए फूलों वाले पौधे लगाइए। किचेन के लिए कुछ हर्ब्स उगाइए। ये छोटी-छोटी आदतें हमें तनाव से बचाने में मदद करती है। भले ही ये शौकिया हों लेकिन इतनी देर आप प्रकृति से जुड़े रहेंगे, जो बिना किसी दवा और डॉक्टर के आपके स्ट्रेस को कम कर देगा।

नेचर के करीब करें वर्कआउट

जिम जाकर ट्रेडमिल पर भागने से अच्छा है, वर्कआउट के लिए किसी खुले और पेड़-पौधों से घिरे जगह का चुनाव करें। कानों में हेडफोन लगा कर

दौड़ना भले ही फैशन हो लेकिन अगर आप रनिंग या जॉगिंग कर रहे हैं तो प्रकृति को सुनने का प्रयास कीजिए। ये हमें मानसिक रिलैक्सेशन देता है। आज हम सब जिस तरह के आक्रामक और अशांत मानसिकता के बनते जा रहे हैं, वहां सिर्फ प्रकृति के पास ही वो पावर है, जो हमें शांत-चित्त रख सकती है। *

कविता
विक्रम सिंह

मछलियां और हम

मछलियां जमीं पर
नहीं लेती सांस
और हम,
नभ के नीचे
घुटने को अभिशप्त हैं।
जंगलों की लाश पर
उठते हैं हमारे महल,
हर ईंट में कैद है,
एक सूखी सांस।
एक वक्त आएगा...
जब हवाएं भी पराई होंगी,
और हम
मछलियों की तरह,
अपनी ही धरती पर
मुरझा जाएंगे।

व्यंग्य / यशोधरा भटनागर

लुढ़कते लोटे

आज के युग में बिन पेंदे का लोटा होना कोई दोष नहीं, बल्कि गुण बन गया है। स्थिर रहो तो मूर्ख कहे जाते हो, पलट जाओ तो चतुर और बार-बार पलटो तो स्मार्ट। अब विचार नहीं बदलते, सिर्फ हैशटैग बदलते हैं। 'बिन पेंदी का लोटा' होना अब रणनीति है।

साफ-सफाई के दौरान कुछ पुराने बर्तनों में पीतल का लोटा हाथ आ गया। मैंने उसे नीचे रखा तो यहां-वहां लुढ़कने लगा। उसे तो अपनी बनावट के कारण लुढ़कना ही था, लेकिन हमें हिंदी की कक्षा में पढ़ाया गया मुहावरा जरूर याद दिला गया, 'बिन पेंदी का लोटा।'

याद आया स्कूल में तो यह भी दूसरे मुहावरों जैसे ही रट लिया था जैसे 'गले का हार होना' या 'चिकना घड़ा होना', परंतु आज हमारे अंदर बैठे लेखक नामक जीव ने गूढ़ार्थ में गोते लगाने के लिए मजबूर कर दिया।

डुबकियां लगाते-लगाते ज्ञान प्राप्त हुआ कि आज के समय में बिन पेंदे का लोटा कोई मुहावरा नहीं, बल्कि खरपतवार की तरह फलती-फूलती एक प्रजाति है, जो राजनीति में, टीवी डिबेट में, व्हाट्सएप यूनिवर्सिटी में और मोहल्ले की चौपाल से लेकर सोशल मीडिया की टाइमलाइन तक हर जगह मौजूद है।

पहले यह गुण नेताओं ने अपनाया। कहा जाता 'वो नेता बिन पेंदे का लोटा है, कब किस दल में चला जाए, कहा नहीं जा सकता।'

गौर कीजिए एक नेता का वार्तालाप-

'मैं नैतिकता के आधार पर पार्टी छोड़ रहा हूं।'

'क्यों नेता जी?'

'इस पार्टी में नैतिकता बची ही कहां है भैया, इसीलिए।'

'तो किस पार्टी में जाओगे?'

'जहां मंत्री पद मिलेगा, वहीं नैतिकता भी मिल जाएगी।'

नेता अगर पत्ता भी तोड़ता है, तो पहले हवा का रुख देखता है। गिरेगा तो उसी दिशा में, जहां ट्रेंडिंग हो। कल तक जो पार्टी उनकी निगाहों में 'गुलाम मानसिकता' की थी, आज वहां जाकर बोलते हैं, 'मैं राष्ट्रसेवा के लिए आया हूं।'

आजकल नैतिकता के जी.पी.एस. विहीन लोटों की कमी नहीं है। अब ये लोटे केवल राजनीति में ही नहीं, सोशल मीडिया पर भी हैं। ये लोटे अब केवल पानी नहीं ढोते, ये व्यूज, लाइक्स और ब्रांड डील्स भी ढोते हैं। ये बिन पेंदी के लोटे डूबते-उतराते रीलों की लहर पर खूब बह रहे हैं।

एक गुरुजी ने पहले कहा, 'हम नई पीढ़ी को आलोचनात्मक चिंतन सिखाएंगे।'

जब बच्चे सरकार से सवाल करने लगे तो गुरु जी बोले, 'नालायक बन गए हैं, संस्कृति खत्म कर दी।'

अब वही गुरुजी पेड वेबिनार में 'नेशनलिज्म और योगा' पढ़ा रहे हैं, क्योंकि वही ट्रेंडिंग है। इन्हीं के चलते नैतिकता अब कूपन कोड बन गई है, मौके पर डालो, डिस्काउंट मिल जाएगा।

जब हम मीडिया के लोटे का पेंदा ढूंढ़ने लगे तो ढूंढ़ते रह गए। पहले कहते थे 'हम सत्ता की आंख में आंख डाल कर सच बोलेंगे।' अब सच को आंख-मिचौली का खेल बना दिया है।

आम जनता विलाप करती है, 'महंगाई हमें रुला रही है।'

रिपोर्टर पूछती है, 'लेकिन एक्ट्रेस की ड्रेस पर आपका क्या कहना है?'

बेरोजगार युवा कहते हैं, 'हमें नौकरी चाहिए।'

रिपोर्टर कहती है, 'एक बाबा ने जल में से निकाली सोने की मछली।'

गरीब गिड़गिड़ाता है, 'हमें राशन चाहिए साहब।'

रिपोर्टर उत्साहित होकर बताती है, 'देखिए, मंत्री जी की पोती ने गाया ऐसा मार्मिक देशभक्ति गीत, देश हुआ गौरवान्वित।'

महिला घबराकर कहती है, 'सड़क पर रोशनी नहीं है, डर लगता है।'

रिपोर्टर कहती है, 'देखिए, किस सेलिब्रिटी ने खरीदी तीन करोड़ की कार!'

एक समय था, जब कहा जाता था 'व्यक्ति को बिना पेंदे का लोटा नहीं होना चाहिए। बर्तन बड़ा या छोटा हो पर पेंदे वाला हो।' लेकिन आजकल हर कोई सोचता है, 'अगर लोटा बनेंगे, तो बहाव में चलेंगे। और बहाव वहीं है, जहां पावर है।'

अगर महाभारत आज लिखा जाता, तो शकुनि अपने भांजे दुर्योधन से कहता, 'मैं पांडवों का स्थायी दुश्मन नहीं हूं, राजनीतिक परिस्थितियां बदल रही हैं। फिलहाल सोशल मीडिया पर पांचों पांडव ज्यादा ट्रेंड कर रहे हैं, तो मैं भी उनकी तरफ चला जाता हूं।'

आज के युग में बिन पेंदे का लोटा होना कोई दोष नहीं, बल्कि गुण बन गया है। स्थिर रहो तो मूर्ख कहे जाते हो, पलट जाओ तो चतुर और बार-बार पलटो तो स्मार्ट। अब विचार नहीं बदलते, सिर्फ हैशटैग बदलते हैं।

'बिन पेंदी का लोटा' होना अब रणनीति है। सिर्फ एक चीज स्थिर है और वो है अस्थिरता। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

उद्भ्रांत का बहुविध रचनाकर्म

करीब डेढ़ सौ पुस्तकों के रचनाकार उद्भ्रांत का रचना संसार बहुत विस्तृत है। उनके रचनाकर्म के विभिन्न आयामों पर अनेक आलोचकों के द्वारा लिखे गए लेखों की पुस्तक 'उद्भ्रांत का रचनाकर्म' कुछ समय पूर्व कैलाश बाजपेयी के संपादन में प्रकाशित होकर आई है। इसके पहले खंड में 19 आलोचनात्मक लेख हैं, जबकि दूसरे खंड में हरभजन सिंह मेहरोत्रा द्वारा उद्भ्रांत पर लिखा गया संस्मरण और शहंशाह आलम द्वारा लिया गया उद्भ्रांत का साक्षात्कार भी संकलित है। उद्भ्रांत की प्रसिद्ध रचना 'रुद्रावतार' पर डॉक्टर आनंद सिंह लिखते हैं, 'उद्भ्रांत की विशेषता यह मानी जानी चाहिए कि उन्होंने आधुनिक कविता के गद्याभासी समकालीन समय में मिथकाभासी छांदस कविता रचकर संश्लिष्ट सर्जनाशक्ति का परिचय दिया है, जो आजकल विलुप्त हो गई प्रवृत्ति है।'

शहंशाह आलम के द्वारा पूछे गए एक सवाल पर उद्भ्रांत का यह कथन उनकी लेखकीय प्रतिबद्धता को प्रकट करता है, 'हर कवि अपनी कविता का मुहावरा स्वयं खोजता है।' कह सकते हैं कि यह किताब उद्भ्रांत के रचनाकर्म को समझने का रास्ता मुहैया कराती है। *

पुस्तकः उद्भ्रांत का रचनाकर्म (आलोचना), **संपादकः** कैलाश बाजपेयी, **मूल्यः** 245 रुपए, **प्रकाशकः** नमन प्रकाशन, नई दिल्ली

बहुत अनोखा-सांस्कृतिक पर्व मिजोरम का मिम कुट उत्सव

भारत के उत्तरपूर्वी राज्य मिजोरम में मनाया जाने वाला मिम कुट उत्सव वैसे तो फसल कटाई का उत्सव है, लेकिन इस उत्सव में लोग अपने समुदाय के दिवंगत हुए लोगों को भी याद करते हैं। अनोखे और उल्लासपूर्ण ढंग से मनाए जाने वाले मिम कुट उत्सव के बारे में जानिए।

सांस्कृतिक उत्सव / धीरज बसाक

भारत के उत्तर-पूर्वी राज्य मिजोरम में हर्षोल्लास से मनाया जाने वाला मिम कुट उत्सव, यहां की आत्मा में बसा पर्व है। यह पर्व मिजोरमवासियों को पूर्वजों की स्मृति के उल्लास से सामूहिक रूप में जोड़ता है। इस उत्सव में वे न केवल प्रकृति के प्रति आभार व्यक्त करते हैं बल्कि अपनी सामाजिक चेतना, सांस्कृतिक गरिमा और मानवीय संबंधों की जीवंतता का भी उल्लास मनाते हैं। यह पर्व हमें संदेश देता है कि जब पूरा समाज मिलकर पूर्वजों की याद में हंसता, गाता है, तो ऐसा समाज अतीत को उत्सव के रूप में मनाता है।

सांस्कृतिक आत्मा में बसा उत्सव: वास्तव में भारत के पूर्वी राज्य मिजोरम की सांस्कृतिक आत्मा में यहां का मिम कुट उत्सव रचा-बसा है। मिम कुट उत्सव कहने को तो एक फसल पर्व है, लेकिन इसमें जीवन के उल्लासपूर्ण दर्शन का पूरा आख्यान छिपा है। वास्तव में मिजो भाषा में मिम का मतलब होता है मकई यानी मक्का और कुट का मतलब होता है त्योहार, यानी मिम कुट उत्सव प्रत्यक्ष रूप में मकई की बेहतर फसल का उत्सव है। यह उत्सव मकई की भरपूर फसल होने के खुशी में मनाया जाता है। लेकिन मकई तो कृषि जीवन का एक प्रतीक भर है। यह वास्तव में परिवार के पूर्वजों की स्मृति का उत्सव और स्मृति के शोक को उल्लास में बदलने का ढंग है।

उल्लास से करते हैं पूर्वजों को याद : मिम कुट उत्सव में परिवार के उन सभी बुजुर्गों/पूर्वजों को याद किया जाता है, जिनका उस साल या अतीत में निधन हुआ है। लेकिन यह दिवंगत बुजुर्गों को शोक संतप्त ढंग से याद करने का उत्सव नहीं है बल्कि ढोल की थाप में पूर्वजों की स्मृति को साझा करने का पर्व है। यह पर्व बहुत ही आनंद और उत्साह के साथ मनाया जाता है।

कैसे मनाया जाता है उत्सव: यह पर्व पारंपरिक लेकिन उत्साहपूर्ण ढंग से मनाया जाता है, जिसमें पहले पक चुकी मक्का की बालियों को भूनकर गांव भर के पूर्वजों और देवी देवताओं की आत्माओं को समर्पित किया जाता है। इसके बाद गांव भर के लोग सामूहिक रूप से एकत्रित होते हैं। परंपरागत वेशभूषा में पुरुष और महिलाएं मिलकर चेराओ नृत्य करते हैं। यह नृत्य स्थानीय ढोल, गोंग और बांसुरी के साझा संगीत में संपन्न होते हैं। इस समारोह में पारंपरिक भोज और पेय की विशेष व्यवस्था होती है। खास करके 'जू' नाम की चावल से बना एक विशेष पारंपरिक पेय, इस भोज और उत्सव की खास पहचान होती है। यह पेय पूरे गांव के लोगों के बीच सामूहिक रूप से बांटा जाता है। इस पेय के साथ खाए जाने वाले तरह-तरह के पकवान भी पूरे गांव के लोग मिलकर बनाते हैं या इनकी व्यवस्था करते हैं।

जब पूरे गांव के सभी बड़े, बुजुर्ग और बच्चे खाने-पीने और संगीत की मस्ती में झूम रहे होते हैं, तब युवा लोग अपनी तीरंदाजी और दूसरे खेल कौशलों, कुश्ती का प्रदर्शन करते हैं।

सामूहिकता में सामाजिकता की झलक: मिम कुट उत्सव की सबसे बड़ी विशेषता इसकी सामूहिकता है। इसमें किसी जाति, वर्ग, उम्र, लिंग के लोगों का कोई भेद नहीं रहता। सब लोग एक साथ मिलकर यह उत्सव मनाते हैं। इससे सामूहिकता मजबूत होती है और सामाजिकता को भरपूर सम्मान मिलता है। इस उत्सव में जो भी लोग अपने-अपने घरों से लाते हैं, वह सामूहिक रूप से एक जगह इकट्ठा कर लिया जाता है। फिर इन तमाम चीजों का लोग मिलकर भरपूर आनंद लेते हैं। कोई नहीं जानता कि वह किसकी क्या चीज का आनंद ले रहा है। इसके साथ ही गांव के सभी लोग मिल कर नृत्य करते हैं। मिलकर भोजन तैयार करते हैं और मिलकर इस सबका आनंद लेते हैं।

पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र: मिजोरम का मिम कुट उत्सव केवल एक पारंपरिक पर्व भर नहीं है बल्कि यह एक ऐसा सांस्कृतिक उत्सव बन चुका है, जो पर्यटकों और संस्कृति प्रेमियों को खूब आकर्षित करता है। देश-विदेश से आए पर्यटक मिजो संस्कृति, खान-पान, वेशभूषा और पारंपरिक जीवनशैली से परिचित होते हैं। इस पर्व के दौरान पर्यटकों के पास स्थानीय लोगों की हस्तशिल्प और दस्तकारी की कई अद्भुत चीजों को नजदीक से देखने और खरीदने का मौका मिलता है। पर्यटक स्थानीय लोगों के साथ मिलकर उनकी ही जैसी पोशाक पहनकर, उनके ही जैसे लोकनृत्य करने की कोशिश करते हैं और इसका भरपूर आनंद लेते हैं। इस उत्सव में भाग लेने से पर्यटकों को प्रामाणिक जनजातीय अनुभव होते हैं। मिजोरम टूरिज्म विभाग अब इस उत्सव को अपने अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन कैलेंडर में भी प्रमोट कर रहा है।

ग्लोबलाइजेशन के दौर में मिम कुट महोत्सव: ग्लोबलाइजेशन के इस दौर में दुनियाभर की संस्कृतियां एक-दूसरे से मेलजोल कर रही हैं, एक-दूसरे को जान-पहचान रही हैं। ऐसे समय में मिजो संस्कृति अपनी उदारता और खुलेपन के कारण दुनिया भर को आकर्षित कर रही है। मिम कुट उत्सव बताता है कि अगर आपके अंदर अपनी संस्कृति, अपनी पहचान धड़कती है, तो वैश्वीकरण की धुंध आपको प्रभावित नहीं कर सकती। आपकी अपनी चमक और धमक दोनों ही बनी रहती हैं। मिम कुट उत्सव जैसे पर्व इस वैश्विक समाज में अपनी शानदार सांस्कृतिक सहभागिता का उत्कृष्ट उदाहरण है। मिम कुट उत्सव जहां एक ओर स्थानीय मिजोवासियों को दुनिया के साथ मेल-जोल बढ़ाने का मौका देता है, वहीं दूसरी ओर यह उत्सव दुनिया के लिए मिजो संस्कृति की खिड़की खोलता है। *

इस बार कब मनाया जाएगा उत्सव

मिम कुट उत्सव हर साल अगस्त माह के अंत या सितंबर के पहले सप्ताह में मनाया जाता है। स्थानीय मान्यताओं के मुताबिक इस साल 1 से 3 सितंबर 2025 के बीच यह उत्सव मनाया जाएगा। गौरतलब है कि मिजोरम में स्थानीय चंद्र पंचांग का चलन है, जो कि फसल की स्थिति और सामूहिक सहमति पर निर्भर होता है। इसलिए अंग्रेजी कैलेंडर की तारीखों से यह आगे पीछे भी हो सकता है।

पहली जॉब के लिए जरूरी हैं ये तैयारियां

अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद हर यंगस्टर अच्छी जॉब चाहता है, ताकि उसका करियर ब्राइट बन सके। लेकिन इसके लिए आपको कुछ तैयारियां जरूर करनी चाहिए और खुद में कुछ स्किल्स भी डेवलप करनी चाहिए। इनके बारे में जानिए।

सेल्फ इंप्रूवमेंट / शिखर चंद जैन

पहली जॉब शुरू करना किसी भी युवा के लिए एक यादगार और महत्वपूर्ण कदम होता है। यह न केवल एक नई जिम्मेदारी का प्रतीक है, बल्कि यह एक ऐसा अवसर भी है, जिसका सही उपयोग करके आप पेशेवर दुनिया में अपनी पहचान बना सकते हैं और आगे चलकर अपने करियर को नई ऊंचाइयों तक ले जा सकते हैं। लेकिन इस क्षेत्र में सफलता पाने के लिए कुछ आदतों और तैयारियों की आवश्यकता होती है। इन तैयारियों और आदतों को अपनाकर आप न केवल जल्दी और अच्छा जॉब पा सकते हैं, बल्कि अपने करियर की मजबूत शुरुआत भी कर सकते हैं।

प्रोफेशनल रिज्यूमे-कवर लेटर: एक संक्षिप्त, आकर्षक और जॉब के लिए अनुकूलित रिज्यूमे बनाएं। अपनी उपलब्धियों को हाइलाइट करें। प्रत्येक जॉब आवेदन के लिए कवर लेटर को कस्टमाइज करें, जिसमें कंपनी और रोल के प्रति आपका उत्साह दिखे। रिज्यूमे में ऐसे कीवर्ड्स का उपयोग करें जो जॉब डिस्क्रिप्शन से मेल खाते हों। इंटरव्यू की समुचित तैयारी करें। सामान्य इंटरव्यू सवालों की प्रैक्टिस करें। कंपनी और जॉब रोल के बारे में रिसर्च करें। मॉक इंटरव्यू के लिए दोस्तों या मेंटर्स की मदद लें।

अनुशासन-समय प्रबंधन: कॉरपोरेट जगत में समय का सही प्रबंधन सबसे महत्वपूर्ण है। समय पर काम पूरा करना, मीटिंग्स में समय पर पहुंचना और डेडलाइंस का पालन करना आपके पेशेवर दृष्टिकोण को दर्शाता है। पहली जॉब में प्रवेश करने से पहले, अपनी दिनचर्या को व्यवस्थित करें। एक डायरी या डिजिटल टूल जैसे गूगल कैलेंडर का उपयोग करें, ताकि आप अपने कार्यों को प्राथमिकता दे सकें। एक रूटीन बनाएं, जिसमें जॉब सर्च, स्किल डेवलपमेंट और नेटवर्किंग के लिए समय हो। हर हफ्ते 10-15 जॉब एप्लीकेशंस भेजने का लक्ष्य रखें। सुबह जल्दी उठने की आदत डालें, ताकि आप दिन की शुरुआत तरोताजा और ऊर्जावान तरीके से कर सकें। समय प्रबंधन की यह आदत न केवल आपके काम की गुणवत्ता को बढ़ाएगी, बल्कि आपके सहकर्मियों और बॉस पर भी सकारात्मक प्रभाव डालेगी।

संवाद कौशल: कॉरपोरेट सेक्टर में प्रभावशाली संवाद एक अनिवार्य गुण है। चाहे वह ई-मेल लिखना हो, मीटिंग में अपनी बात रखना हो या सहकर्मियों के साथ विचार-विमर्श करना हो, स्पष्ट और संक्षिप्त बातचीत आपके विचारों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करता है। पहली जॉब के लिए, अपने लिखित और मौखिक कम्युनिकेशन स्किल्स को निखारें। औपचारिक ई-मेल लिखने का अभ्यास करें, अपनी बात को आत्मविश्वास के साथ कहने की कला सीखें और सक्रिय श्रोता बनें। यदि आपकी अंग्रेजी या अन्य संवाद भाषा में कमी है, तो उसे सुधारने के लिए ऑनलाइन कोर्स या प्रैक्टिस सेशन में शामिल हों।

प्रोफेशनल एटीट्यूड: यह स्किल आपके करियर की नींव मजबूत बनाता है। जॉब ज्वाइन करने से पहले, कार्यस्थल के ड्रेस कोड, व्यवहार और संस्कृति को समझने की कोशिश करें। हमेशा पॉजिटिव और प्रॉब्लम सोल्विंग अप्रोच अपनाएं। यदि आपसे कोई गलती होती है, तो उसे स्वीकार करें और उससे सीखें। यह आपके सहकर्मियों और बॉस के बीच आपकी विश्वसनीयता को बढ़ाएगा।

तकनीकी कौशल जरूरी: आज के डिजिटल युग में, तकनीकी कौशल कॉरपोरेट सेक्टर में सफलता के लिए अनिवार्य हैं। अपनी जॉब प्रोफाइल के अनुसार जरूरी सॉफ्टवेयर और टूल्स सीखें। अपनी फील्ड से संबंधित तकनीकी और सॉफ्ट स्किल्स (जैसे कम्युनिकेशन, टाइम मैनेजमेंट, टीमवर्क) सीखें। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स (जैसे कोर्स, एरा, उडेमी, लिंक्डइन लर्निंग) से सर्टिफिकेशन कोर्स करें। प्रोग्रामिंग, डेटा एनालिसिस, डिजिटल मार्केटिंग जैसे ट्रेंडिंग स्किल्स पर फोकस करें, अगर वे आपके क्षेत्र से मेल खाते हों।

आत्मविश्वास-पहल: पहली जॉब में आत्मविश्वास और पहल करने की क्षमता आपको जल्दी सफलता दिला सकती है। अपने विचारों को साझा करने से न डरें और नई जिम्मेदारियां लेने के लिए तैयार रहें। उदाहरण के लिए यदि किसी प्रोजेक्ट में सुधार की गुंजाइश है, तो सुझाव देने में संकोच न करें। हां, आत्मविश्वास और अहंकार के बीच संतुलन बनाए रखें। *

देसी आबोहवा का विदेशी पेड़ हिमालयन मेपल

विशिष्ट पेड़ / वीना गौतम

भारत में सड़कों के किनारे यूं तो पारंपरिक रूप से नीम, इमली, पीपल, बरगद, गुलमोहर, अशोक, कचनार आदि के पेड़ लगे देखे जाते हैं। लेकिन हाल के सालों में सड़कों के किनारे, शहर की पॉश कालोनियों, बड़े पार्कों और कई दूसरी जगहों पर एक चौड़ी लाल, पीली और नारंगी पत्तियों वाला पेड़ भी लगाया जाना शुरू हुआ है, जो जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और पूर्वोत्तर के अलग-अलग इलाकों में खासतौर पर देखा जाता है। इसे हिमालयन मेपल या एसर ओब्लोंगम या कश्मीर मेपल या पेंटेड मेपल या ओक भी कहते हैं। सरल शब्दों में यह मेपल का पेड़ है, जिसका मूल निवास यूं तो उत्तरी अमेरिका, यूरोप, उत्तरी अफ्रीका, चीन और एशिया के कुछ देशों में है, लेकिन 132 प्रजातियों वाले सैपिंडेसी परिवार के इस मेपल के पेड़ की कुछ प्रजातियां भारत में भी पाई जाती हैं।

मेपल कनाडा का राष्ट्रीय वृक्ष है, कनाडा के झंडे और राज्य चिन्ह में भी मेपल की पत्तियां देखी जा सकती हैं। मेपल का पेड़ अनुकूल परिस्थितियों में कई सौ सालों तक मजबूती से खड़ा रहता है। मेपल का पेड़ ताकत और सहनशीलता का प्रतीक माना जाता है। सर्दियों में मेपल के पेड़ से एक-एक करके उसकी रंग-बिरंगी सारी पत्तियां झड़ जाती हैं और पेड़ के नीचे चौड़ी और रंगीन पत्तियों का ढेर लग जाता है। पहले यह भारत में सिर्फ हिमालयी क्षेत्र में ही दिखता था, लेकिन अब देश के बड़े शहरों के सौंदर्यीकरण के चलते यह इन शहरों के खूबसूरत पार्कों, पॉश कालोनियों और चौड़ी सड़कों के किनारे भी देखा जाता है।

कई रूपों में उपयोगी: भारत में ज्यादातर पाए जाने वाले हिमालयन मेपल के बड़े फायदे हैं। इसकी लकड़ी, फर्नीचर और निर्माण के कार्य में बहुत उपयोगी साबित होती है। इसकी छाल और पत्तियों का उपयोग पारंपरिक चिकित्सा में किया जाता है। कई मधुमक्खी प्रजातियों को यह बहुत आकर्षित करता है, इसलिए यह शहद उत्पादन में बहुत सहायक होता है, क्योंकि इसकी लाल, पीली पत्तियां इसे बेहद आकर्षक और शानदार पेड़ का दर्जा दिलाती हैं, इसलिए विशेष तौर पर कश्मीर में इसे पार्कों के किनारे बड़े करीने से लगाया जाता है। जापानी मेपल जैसी कुछ प्रजातियों की भी अच्छी कीमत मिलती है। खूबसूरत पर्यटन स्थलों में यह जगहों की शोभा बढ़ाने और पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए भी लगाया जाता है। *

सब पर नजर रखता सीसीटीवी कैमरा

यूजफुल डिवाइस / संध्या सिंह

घर, ऑफिस की सुरक्षा का मामला हो या बैंक, स्कूल की, हर कहीं सब कुछ चुपचाप अपनी नजरों में कैद करता रहता है सीसीटीवी कैमरा। इसकी उपयोगिता बढ़ने की कई वजहें हैं, इनके बारे में आप भी जानना चाहेंगे।

आज के डिजिटल युग में सीसीटीवी कैमरा महज एक तकनीकी उपकरण नहीं, बल्कि एक ऐसी 'तीसरी आंख' बन चुका है, जो हर पल, हर कोने में नजर रखता है- चाहे कोई जानता हो या न जानता हो। यह कैमरा न बोलता है, न टोकता है, लेकिन उसकी नजरें चुपचाप सब कुछ देखती और रिकॉर्ड करती हैं।

सब कुछ देखता चुपचाप: बाजार, स्कूल, दफ्तर, रेलवे स्टेशन, गलियां-हर जगह ये 'तीसरी आंख' मौजूद है। यह न केवल अपराधों को रोकने में मदद करती है, बल्कि न्याय दिलाने में भी एक अहम गवाह बन जाती है। कई बार लोग अपनी हरकतों से अनजान होते हैं कि कोई उन्हें देख रहा है, पर सीसीटीवी की आंख सब कुछ समेट रही होती है। हालांकि जहां यह सुरक्षा का प्रतीक है, वहीं इसे लेकर निजता पर सवाल भी उठते हैं। क्या हर जगह नजर रखना सही है? लेकिन मौजूदा हालात में, यह आंख समाज को सजग और जवाबदेह बनाने में सहायक सिद्ध हो रही है। इस तरह, सीसीटीवी आधुनिक युग की वह अदृश्य शक्ति है, जो बिना बोले भी हर किसी को यह एहसास दिलाती है- कोई देख रहा है। इसीलिए इन दिनों कहते हैं जिंदगी कैमरों की जद में कैद हो गई है। हर पल हर जगह तमाम अदृश्य निगाहें हमें घेरे रहती हैं।

हर शहर में मुस्तैद नजर: राजधानी दिल्ली में मेट्रो स्टेशन की सीढ़ियां चढ़ते ही जिस इबारत पर आपकी पहली नजर पड़ती है, वह एक चेतावनी होती है, 'सावधान आप कैमरे की निगाह में हैं।' बैंक में घुसिए, अस्पताल में प्रवेश करिए, कॉलेज की सीढ़ियां चढ़िए, मंदिर की ड्योढ़ी लांघिए हर जगह आपको इसी पहले वाक्य के इन दिनों दर्शन होते हैं। दिन में ज्यादातर समय कैमरे की जद में रहना अब महज वीवीआईपी लोगों की जिंदगी का सच नहीं है। यह आम महानगरीय लोगों की जिंदगी की कहानी बन चुका है। सिर्फ देश की राजधानी दिल्ली का ही ये हाल नहीं है, मुंबई, कोलकाता, हैदराबाद, चेन्नई, पुणे, बेंगलुरु जैसे तमाम महानगरों और अब तो मझोले और छोटे शहरों की भी यही कहानी बनती जा रही है। लखनऊ, कानपुर, भोपाल, जयपुर, गुवाहाटी, बनारस, अमृतसर सबकी यही कहानी है। क्योंकि जिंदगी का हर पल खतरों, अविश्वास और विश्वासघात से जुड़ गया है।

संभालता सुरक्षा की जिम्मेदारी: कभी लोगों की यादों को सहजने वाला कैमरा, आज लोगों की सुरक्षा का भार संभालता है या कम से कम उसे उसकी बदौलत सुरक्षा का मनोवैज्ञानिक सहारा देता है। कैमरा बिल्कुल नए अवतार में आ चुका है। मोबाइल क्रांति के बाद जब दुनिया की तमाम मशहूर कैमरा बनाने वाली कंपनियां बंद होने के कगार पर पहुंच गईं थीं, तब शायद ही किसी ने सोचा होगा कि बहुत जल्द कैमरे का यह विलक्षण रूप सामने आएगा। आज कैमरे का पर्याय हो गए हैं सीसीटीवी कैमरे। सीसीटीवी कैमरे आज प्रमुख सेफ्टी के टूल की तरह उभरे हैं।

बढ़ता गया प्रचलन: एक जमाना वह भी था, जब सीसीटीवी कैमरों को दुकानदारों की दुकान का चौकीदार भर समझा जाता था। लेकिन जैसे-जैसे वक्त बदला और तकनीक पहले से कई गुना ज्यादा बेहतर हुई जबकि कीमतें पहले से काफी नीचे आईं तो फिर मानो, इनके इस्तेमाल की बहार ही आ गई। घटती कीमतों की वजह से सीसीटीवी कैमरे आम आदमी की पहुंच में आ गए। आज सीसीटीवी कैमरे न केवल सेफ्टी का एक सेंस देते हैं, बल्कि जहां आपकी आंख नहीं पहुंच सकती, वहां तक भी आपको पहुंचाते हैं। *

हिंदी फिल्म जगत के महानतम फिल्मकारों में शुमार गुरुदत्त ने कई क्लासिक फिल्में दीं। गुरुदत्त की शानदार विरासत को उनकी बहू और पोतियां आज भी संभाले हुए हैं। गुरुदत्त के जन्मशती वर्ष पर वे, उनको भावुकता से याद करती हैं। साथ ही उनके जीवन के कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं पर एक नजर।

महान फिल्मकार गुरुदत्त की विरासत संभाल रहे परिजन

जन्मशती वर्ष / कैलाश सिंह

महान फिल्मकार और अभिनेता गुरुदत्त का जन्म 9 जुलाई 1925 को बंगलोर (अब बेंगलुरु) में हुआ था। उनके पिता शिवशंकर राव पादुकोण एक स्कूल टीचर थे और मां वसंथी पादुकोण गृहिणी थीं, जो कभी-कभी कहानियां भी लिखा करती थीं। माता-पिता ने उन्हें वसंत कुमार शिवशंकर पादुकोण नाम दिया, लेकिन बाद में उनका नाम बदलकर गुरुदत्त रख दिया गया।

गुरुदत्त के माता-पिता कारवार (कर्नाटक) में रहते थे, लेकिन उन्हें अपना बचपन भवानीपुर (प. बंगाल) में गुजारना पड़ा, जिससे वह बंगाली भी अच्छी बोलने लगे। घर में पैसे की तंगी थी, इसलिए दसवीं के बाद कॉलेज न जा सके। उनके बकुट मामा (बालकिशन बेनेगल, जो श्याम बेनेगल के चाचा और गुरुदत्त की मां के कजिन थे) ने उन्हें उदय शंकर की नृत्य मंडली में शामिल करा दिया। गुरुदत्त ने वहां नृत्य सीखा। कुछ दिन उन्होंने टेलीफोन ऑपरेटर के रूप में भी नौकरी की। लेकिन मन नहीं लगा तो कोलकाता छोड़कर पुणे आ गए जहां प्रभात फिल्म कंपनी में उन्हें नृत्य निर्देशक की नौकरी मिली और फिर जीवन का रुख ही बदल गया।

ऐसे हुई गुरुदत्त-देवानंद की दोस्ती: पुणे में जिस लौंडरी पर गुरुदत्त अपने कपड़े धुलवाते थे, वहीं पर देवानंद के कपड़े भी धुलने आते थे। एक दिन संयोग से दोनों की कमीजें आपस में बदल गईं और दोनों की मुलाकात हुई, जो दोस्ती में बदल गई। गुरुदत्त और देवानंद ने एक-दूसरे से वादा किया, जो भी पहले निर्माता बनेगा, वह दूसरे को अपनी फिल्म में काम देगा। पहले देवानंद निर्माता बन गए और उन्होंने 'बाजी' के निर्देशन की जिम्मेदारी गुरुदत्त को दी और अपना वादा निभाया। इसी तरह जब गुरुदत्त ने 'सीआईडी' बनाई तो देवानंद को उसमें बतौर हीरो कास्ट किया।

गीता दत्त से प्रेम और विवाह: सन 1951 में आई फिल्म 'बाजी' में गीता रॉय ने 'तदबीर से बिगड़ी हुई तकदीर बना ले' गीत गाया था। उनकी मखमली आवाज सुनकर गुरुदत्त अपना दिल दे बैठे। तीन साल तक कोर्टशिप चली और फिर 26 मई 1953 को गीता रॉय ने गुरुदत्त से शादी कर ली। उनके तीन बच्चे हुए- तरुण, अरुण और नीना।

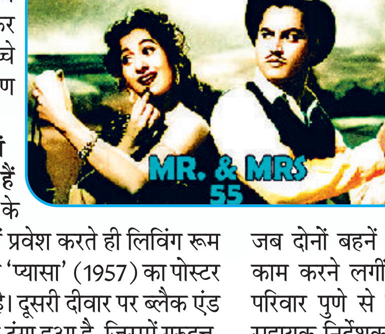

बहू-पोतियां संभाल रही हैं विरासत: गुरुदत्त के पुत्र अरुण के घर में प्रवेश करते ही लिविंग रूम की दीवार पर फिल्म 'प्यासा' (1957) का पोस्टर लगा हुआ दिखता है। दूसरी दीवार पर ब्लैक एंड वाइट फैमिली फोटो टंगा हुआ है, जिसमें गुरुदत्त, उनकी गायिका पत्नी गीता (राय) दत्त और उनके बच्चे हैं। मुंबई के इस घर में गुरुदत्त की मौजूदगी का एहसास हर जगह होता है। यह गुरुदत्त की बहू इफ्फत का घर है, जिसमें वह अपनी दोनों बेटियों करुणा और गौरी के साथ रहती हैं। इफ्फत ने गुरुदत्त के बेटे अरुण दत्त से शादी की थी, जो अब इस दुनिया में नहीं हैं। लेकिन वे अपनी दोनों बेटियों के साथ अपने परिवार की महान सिनेमाई विरासत को संभाले हुए हैं। गुरुदत्त की पोती गौरी बताती हैं, 'जब हम छोटे थे, तो हमें अपने दादा के कार्य से परिचय हमारे पिता ने कराया था। पुणे में शाम को अकसर बिजली गुल हो जाया करती थी और बिजली आने का इंतजार करते हुए डैडी अपने पैरेंट्स के बारे में बातें किया करते थे।'

गुरुदत्त की बहू इफ्फत के साथ करुणा और गौरी

सिने जगत से जुड़ी हैं पोतियां: चूंकि पोतियों का अपने दादा गुरुदत्त की फिल्मों से परिचय किशोरावस्था में ही हो गया था, इसलिए वे उनके कार्य को बेहतर ढंग से समझ सकीं और तटस्थता के साथ उस पर अपनी राय भी कायम कर सकीं। करुणा को 'प्यासा' ने अधिक प्रभावित किया है, लेकिन उन्हें लगता है कि 'मिस्टर एंड मिसेज 55' (1955) को उतनी प्रशंसा नहीं मिली, जितनी कि मिलनी चाहिए थी। गौरी की पसंदीदा फिल्म 'कागज के फूल' (1959) है। जब दोनों बहनें फिल्म प्रोफेशनल के तौर पर काम करने लगीं तो कुछ साल पहले उनका परिवार पुणे से मुंबई शिफ्ट हो गया। करुणा सहायक निर्देशक हैं और गौरी पृथ्वी थिएटर से जुड़ी हुई हैं। दोनों बहनें गुरुदत्त की विरासत को आगे बढ़ाने की इच्छुक हैं और उसी दिशा में कार्य कर रही हैं।

गुरुदत्त की जन्मशताब्दी वर्ष का जश्न: गुरुदत्त की जन्मशती आरंभ हो चुकी है। इस बारे में इफ्फत बताती हैं, 'परिवार के ऐसे अवसरों का हम प्राइवेटली जश्न मनाते हैं। लेकिन हम परिवार की परंपरा का पालन करते हुए अपने दिवंगत सदस्यों के पसंदीदा व्यंजन तैयार करके उन्हें पक्षियों को खिलाते हैं। यह परंपरा अरुण ने शुरू की थी।' गौरी भावुक होकर बताती हैं, 'हालांकि हमारे दादा गुरुदत्त की हमेशा ही हमारे जीवन में प्रभावी मौजूदगी रही है, लेकिन इस साल हम उसे कुछ अधिक ही महसूस कर रही हैं, क्योंकि 9 जुलाई 2025 को अगर वे होते तो सौ बरस के हो गए होते।' *